



कमजोर कभी माफ नहीं कर सकता। क्षमा तो ताकतवर लोगों की निशानी है।

—राष्ट्रपिता महात्मा गांधी

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की



www.4pm.co.in



www.facebook.com/4pmnewsnetwork



@Editor_SanjayS



YouTube



@4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 12 ● अंक 248 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 16 अक्टूबर, 2026

मंधाना की कप्तानी में नए युग की... 7 बिहार में करवट ले रही है सियासी... 3 मतदाता सूची में बड़े पैमाने... 2

तिरंगे की ललकार, दिल्ली में बैरिकेड की दीवार



- » दिपके की हुंकार से क्यों मची हलचल? 'लहरा दो तिरंगा' के सामने सत्ता की परीक्षा
- » सेंट्रल पार्क बंद, पुलिस का नोटिस भारी सुरक्षा इंतजाम
- » सौरव दास और आशुतोष रांका की गिरफ्तारी के विरोध में सीजेपी का ऐलान
- » राहुल गांधी के तांडव से लेकर तिरंगे की राजनीति तक विपक्ष सरकार के बनाए नैरेटिव को उसी के सामने खड़ा कर रहा है

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में तिरंगा लहराने की पुकार है और जवाब में बैरिकेड खड़े हैं। एक तरफ कॉकरोच जनता पार्टी यानी सीजेपी के संस्थापक अभिजीत दिपके हैं जो लहरा दो तिरंगा के नाम पर समर्थकों को जुटाने निकले हैं। दूसरी तरफ दिल्ली पुलिस है जिसने दिपके को नोटिस थमाया है कर्नॉट प्लेस के सेंट्रल पार्क को दो दिन के लिए बंद रखा गया है और राजधानी के इस व्यावसायिक इलाके में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। सवाल अब सिर्फ एक मार्च का नहीं रहा। सवाल यह है कि राष्ट्रीय ध्वज के साथ विरोध जताने की इस मुहिम का राजनीतिक असर कितना दूर तक जाएगा?

सौरव दास और आशुतोष रांका की गिरफ्तारी ने सीजेपी को एक नया मुद्दा दे दिया है। पार्टी का आरोप है कि उसके नेताओं को प्रदर्शन के दौरान तिरंगा लहराने और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग करने के कारण निशाना बनाया गया। पुलिस का पक्ष अलग है। उसके मुताबिक जंतर-मंतर पर



सीजेपी के मार्च का राजनीतिक अर्थ भी कम अहम नहीं है। भाजपा ने राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय प्रतीकों को अपनी राजनीतिक पहचान में प्रमुख स्थान दिया है। हर घर तिरंगा जैसे अभियान के जरिए राष्ट्रीय ध्वज को व्यापक जनमागरी से जोड़ा गया। अब सीजेपी ने लहरा दो तिरंगा को अपने विरोध का नारा बनाया है। इससे राजनीतिक संदेश की एक नई लड़ाई पैदा होती है। सीजेपी यह सवाल उठा रही है कि अगर तिरंगा देश के हर नागरिक का है तो उसे लेकर शांतिपूर्ण विरोध पर इनकी पाबंदियां क्यों? दूसरी तरफ सरकार और पुलिस के पक्ष में तर्क है कि राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान और कानून-व्यवस्था साथ-साथ चलने चाहिए किसी प्रतीक के

राष्ट्रवाद का नैरेटिव अब विपक्ष का तिरंगा

दिपके को नोटिस, पार्क बंद

दिल्ली पुलिस ने अभिजीत दिपके को प्रस्तावित मार्च के संबंध में नोटिस दिया और कर्नॉट प्लेस में भीड़ जुटाने पर प्रतिबंधों का हवाला दिया। सेंट्रल पार्क को दो दिन के लिए बंद रखने का आदेश भी सामने आया। आधिकारिक सूचना में इसके लिए प्रशासनिक कारण बताए गए। पुलिस ने कहा कि राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राष्ट्रगान गाने के लिए नियमों, गरिमा और अनुशासन का पालन होना चाहिए। पुलिस ने सीमित समूह को किसी उपयुक्त स्थान पर तिरंगा लेकर राष्ट्रगान गाने की सुविधा देने की बात भी कही। रिपोर्टों के मुताबिक, 11 लोगों के समूह का विकल्प सामने आया। दूसरी ओर सीजेपी की अपील बड़े जनसमूह को जुटाने की है।

प्रतिबंधों और शांति बनाए रखने की शक्तों के उल्लंघन का मामला है। दोनों पक्षों के बीच यही टकराव अब दिल्ली की सड़कों पर राजनीतिक सवाल बनकर खड़ा है। दिपके ने मार्च से पहले

बीजेपी का नैरेटिव लौट कर उसी की ओर आ रहा है

अब इस तस्वीर को व्यापक राजनीति से जोड़कर देखिए। राहुल गांधी मुख्य चुनाव आयुक्त और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर के खिलाफ चल रहे विरोध को शिव का तांडव बता चुके हैं। सीजेपी ने उसी राजनीतिक उबाल के बीच तिरंगे को अपने प्रदर्शन का केंद्रीय प्रतीक बनाया है। भाजपा लंबे समय से राष्ट्रवाद राष्ट्रीय ध्वज और देशभक्ति को अपनी राजनीतिक पहचान के प्रमुख हिस्सों में रखती रही है। ऐसे में 'हर घर तिरंगा' जैसे अभियान के बाद 'लहरा दो तिरंगा' का नारा विपक्षी विरोध की नई प्रतीकात्मक लड़ाई बन

सकता है। लेकिन क्या इतना भर किसी राजनीतिक बाजी के पलटने का संकेत है। किसी आंदोलन की ताकत का फैसला केवल नारों, बैरिकेड या सुरक्षा बलों की संख्या से नहीं होता। यह देखना होगा कि कितने लोग साथ आते हैं अलग-अलग विपक्षी दल कितनी एकजुटता दिखाते हैं और मतदाता सूची से जुड़े आरोपों पर ठोस जवाबदेही की मांग कितनी दूर तक पहुंचती है। चुनाव आयोग ने पक्षपात के आरोपों से इनकार किया है और भाजपा भी विपक्ष के आरोपों को खारिज करती रही है। फिर भी सत्ता के सामने एक मुश्किल सवाल खड़ा है कि आगे क्या होगा।

इस्तेमाल से प्रतिबंधों का उल्लंघन वैध नहीं हो जाता। यही वह बिंदु है जहां विपक्ष भाजपा के राष्ट्रवाद संबंधी नैरेटिव को चुनौती देने की कोशिश कर सकता है। राहुल गांधी ने हाल में मुख्य चुनाव आयुक्त और एसआईआर को लेकर चल रहे विरोध को शिव का तांडव कहा था। उनका तर्क था कि यह आंदोलन किसी तय योजना से ज्यादा लोगों के दिल और संविधान की रक्षा की भावना से जुड़ा है। उन्होंने अलग-अलग विरोधों को एक व्यापक लोकतांत्रिक प्रतिरोध के रूप में पेश किया।



ही साफ कर दिया कि वह पीछे हटने के मूड में नहीं हैं। पुलिस ने जहां लोगों से प्रस्तावित जमावड़े में शामिल नहीं होने की अपील की वहीं सीमित संख्या में लोगों को किसी उपयुक्त स्थान पर तिरंगा लेकर राष्ट्रगान गाने की सुविधा देने की बात भी कही। दिल्ली हाईकोर्ट ने प्रस्तावित प्रदर्शन पर पूर्ण रोक लगाने से इनकार किया लेकिन पुलिस को कानून के मुताबिक भीड़ को नियंत्रित करने की छूट दी। उधर, सेंट्रल पार्क बंद होने और सुरक्षा के भारी इंतजाम ने इस पूरे

को और बड़ा बना दिया है। हाईकोर्ट ने नहीं लगाई पूर्ण रोक लेकिन पुलिस को नियंत्रण का अधिकार : प्रस्तावित मार्च को लेकर मामला दिल्ली हाईकोर्ट तक पहुंचा। कर्नॉट प्लेस के एक व्यापारी की याचिका में आशंका जताई गई कि प्रदर्शन से व्यापार, यातायात और आम लोगों की आवाजाही प्रभावित हो सकती है। अदालत ने सीजेपी के प्रदर्शन पर पूर्ण रोक लगाने से इनकार किया। संबंधित खबर पेज 8 पर

मतदाता सूची में बड़े पैमाने पर फर्जी वोट हैं : अखिलेश यादव

» बोले सपा प्रमुख यूपी में 16.18 लाख मतदाता रहस्यमयी
□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने समाजवादी ईसीआई आडिट-1 पुस्तिका जारी करते हुए आरोप लगाया कि एसआईआर के बाद भी मतदाता सूची में बड़े पैमाने पर फर्जी वोट हैं। चुनाव आयोग ने एसआईआर के दौरान भरे गये 87.56 लाख फार्म-6 में से सिर्फ 71.38 लाख फार्म-6 की जानकारी सार्वजनिक की है। अभी 16.18 लाख फार्म के नए वोटों की जानकारी नहीं दी।

उन्होंने कहा कि इन वोटों के नाम, उम्र और नातेदार एक ही हैं। अब तक 16.18 लाख के अलावा तीन लाख और फर्जी वोटों को पकड़ा है। सपा राज्य मुख्यालय में अखिलेश ने कहा कि भाजपा दस तरह की चुनावी चालें चलती है। जिसके तहत नकली वोट जुड़वाती है, विरोधी के असली वोट कटवाती है। पैसा और खान-पान बंटवाती है। मतदाताओं को डराती-धमकाती है, ईवीएम सेट कराती है। फर्जी गिनती कराती है। हारे भाजपाइयों को जीता बताती है और जीत का प्रमाणपत्र बंटवाती है। विपक्ष में फूट डलवाती है और

‘हम एसआईआर के जरिये हो रही साजिश का विरोध करते हैं’
□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि चुनाव आयोग पहले विशेष गहन पुनरीक्षण के जरिये लोगों के नाम काट रहा है और फिर जोड़ने के नाम पर धांधली करने की साजिश रच रहा है। उन्होंने कहा कि एक वोटर के नाम कई जगह जोड़े जा रहे हैं जिससे कि भाजपा के पक्ष में फर्जी मतदान करवाया जा सके।

अखिलेश यादव ने एक युवा को बुलाया और कहा कि इनका वोट कई जगह है जिसका खुलासा इन्होंने खुद किया है। ये युवा एक जगह ही वोट करेगा पर जहां-जहां इनका नाम है वहां कोई और भाजपा के पक्ष में मतदान करेगा। हम एसआईआर के खिलाफ नहीं हैं बल्कि इसके जरिये चुनाव लूटने की जो साजिश हो रही है उसके खिलाफ हैं। भाजपा के लोगों की चोरी पकड़ ली गई है इसलिए ये लोग घबराए हुए हैं। ये लोग जानते हैं कि उनका कोर वोट भी इनसे दूर जा रहा है इसलिए ये धांधली कर रहे हैं।



अलग-अलग त्योहार ही हमारे देश की खूबसूरती

यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव बोले- अलग-अलग त्योहार ही हमारे देश की खूबसूरती, भाजपा के लोग इसमें भी फायदा लेते हैं। भाजपा धर्म के नाम पर नफरत फैलाती है। चंदा चोरी करती है, लोगों को डराती है।

तोड़कर सरकार बनाती है। उन्होंने सपा पदाधिकारियों से अपील की कि 17 और 24 अक्टूबर को अपने बूथों पर रहकर नए वोट जुड़वाएं और फर्जी वोटों पर निगरानी करें। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग ने पूरी एसआईआर प्रक्रिया

चुनाव आयोग भाजपा के इशारे पर काम कर रहा

अखिलेश ने ये भी आरोप लगाया कि चुनाव आयोग भाजपा के इशारे पर काम कर रहा है और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को इस्तीफा दे देना चाहिए। अखिलेश ने कहा कि आधार कार्ड को वोटर लिस्ट से जोड़ देना चाहिए। इस अवसर पर भाजपा के पूर्व विधायक राजीव चन्ना, मनमोहन सिंह सैनी, कटरा के ब्लाक प्रमुख मवानी भीख शुक्ला अपने पांचों बेटों के साथ, पूर्व केन्द्रीय मंत्री बीपी मौर्या के पुत्र अश्वय मौर्य, कुण्डा के भाजपा नेता योगेन्द्र नाथ मिश्रा समेत बड़ी संख्या में लोग आज समाजवादी पार्टी में शामिल हुए।

‘लखनऊ-एक्सप्रेस’ का इंजन फेल हो गया है

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की प्रेस वार्ता पर तंज कसा है। सोशल मीडिया साइट एक्स पर अखिलेश ने लिखा- सुना है सत्ताधारियों की तरफ से कोई बड़ी प्रेस-कांफ्रेंस रहे रही है, लगता है ‘लखनऊ-एक्सप्रेस’ का इंजन फेल हो गया है, तभी दिल्ली के इंजन ने लखनऊ की कमान किसी और को थमाने का अंदरूनी फैसला कर लिया है। उन्होंने लिखा कि ये प्रेस कॉन्फ्रेंस तो बस दिखावटी है, असली खेल तो लखनऊ के इंजन को खटारा साबित करके उसे पर्मनेंट हटाने का है।

अब लखनऊ वालों की रक्षा कौन करेगा?

उधर प्रेस वार्ता में राजनाथ सिंह ने कहा कि दिल्ली में पिछले दिनों हुए घटनाक्रम कई गंभीर सवाल खड़े कर रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस और उसके राजनीतिक सहयोगी प्रत्यक्ष रूप से और अपने समर्थक संगठनों के माध्यम से युवाओं की ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों और राष्ट्र निर्माण की दिशा में लगाने के बजाय राजनीतिक टकराव और अराजकता फैलाने के साधन बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि देश के नौजवानों को अराजकता की राजनीति का मोहरा बनाने की कोशिश की गई है।

को जीरो कर दिया है। नए सिरे से मतदाता जो?ने का अभियान वोटरलिस्ट रिवीजन चला रहा है। इसमें ध्यान देना पड़ेगा कि जिन लोगों ने अपना वोट एक जगह बनवा लिया है, वे फिर शहर में दोबारा फर्जी वोट न बनवा लें। उदाहरण दिया कि आजमगढ़ में एक व्यक्ति के एक नाम से 10 वोट हैं। आरोप लगाया कि एक वोट वह डालेगा और 9 वोट भाजपा डाल लेगी। उन्होंने कहा कि इस बार भाजपाइयों के पाप का घ?ा ही नहीं पाप की टंकी फूटेगी।

रिश्वत मामले में केरलम सरकार ने कानून के तहत की कार्रवाई: सतीशन

» मुख्यमंत्री बोले नहीं की कोई जल्दबाजी
□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। केरलम के मुख्यमंत्री वी. डी. सतीशन ने कहा कि कथित सीएमआरएल रिश्वत मामले में पूर्व मुख्यमंत्री पिनराई विजयन और उनके परिजनों के खिलाफ भ्रष्टाचार रोधी कानून के तहत प्राथमिकी दर्ज करने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) से पत्र मिलने पर राज्य सरकार ने कोई जल्दबाजी नहीं की।

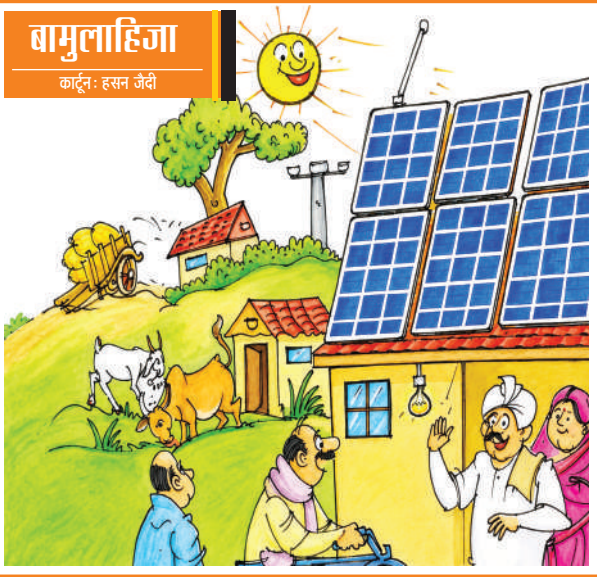
सतीशन ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि उन्होंने इस मुद्दे पर राज्य के गृह मंत्री रमेश चेन्नित्थला, मंत्रिमंडल के अन्य वरिष्ठ सदस्यों और संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) के नेताओं के साथ चर्चा की थी। इसके बाद सामूहिक रूप से मामले में आगे की कार्रवाई के संबंध में कानूनी राय लेने का फैसला किया गया। मुख्यमंत्री ने कहा, हमने कोई

भाजपा ने उच्च न्यायालय के फैसले का स्वागत किया

उच्च न्यायालय के फैसले का स्वागत करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर ने सोशल मीडिया पर ‘एक्स’ पर कहा, भारत में आप भाग सकते हैं, लेकिन यदि आप भाग राजनेता हैं तो छिप नहीं सकते। उच्च न्यायालय का आज का फैसला निर्णायक और स्पष्ट है। पिनराई विजयन को तुरंत इस्तीफा दे देना चाहिए। माकपा के प्रदेश सचिव एम. वी. गोविंदन ने संवाददाताओं से कहा कि फैसले की समीक्षा करने के बाद इस मामले से राजनीतिक और कानूनी, दोनों स्तरों पर प्रभावी ढंग से निपटा जाएगा। विजयन और उनके रिश्तेदारों को झटका देते हुए केरल उच्च न्यायालय ने कथित सीएमआरएल रिश्वत मामले में प्राथमिकी दर्ज करने के एकल न्यायाधीश के आदेश के

जल्दबाजी नहीं की, क्योंकि यह सरकार किसी से बदला लेने या राजनीतिक प्रतिशोध लेने के लिए अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करेगी। हमने कानूनी सलाह ली और उसके अनुसार प्रवर्तन निदेशालय के आरोपों की प्रारंभिक जांच शुरू करने के लिए कार्रवाई की। उन्होंने कहा कि जब केरल उच्च न्यायालय ने कहा कि प्रारंभिक जांच की आवश्यकता नहीं है और प्राथमिकी दर्ज

के आदेश को चुनौती दी थी। एकल न्यायाधीश ने कथित सीएमआरएल रिश्वत मामले में ईडी की रिपोर्ट के आधार पर उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया था। इससे पहले दिन में उच्च न्यायालय के फैसले का भाजपा के नेता शोन जॉर्ज और कांग्रेस विधायक मैथ्यू कुझलनादन ने स्वागत किया। दूसरी ओर, माकपा ने दावा किया कि विजयन, उनकी बेटी वीणा टी. और उनके पति रियास के खिलाफ मामला झूठा और राजनीति से प्रेरित है। पार्टी ने इसे भाजपा और यूडीएफ की ओर से उन्हें तथा वामपंथी दल को निशाना बनाने के लिए उठाया गया सुनियोजित कदम बताया। इस बीच, राज्य के गृह मंत्री रमेश चेन्नित्थला ने कहा कि उच्च न्यायालय का आदेश सरकार के लिए झटका नहीं है, क्योंकि सरकार ने कानून के अनुसार काम किया है, न कि किसी राजनीतिक प्रतिशोध की भावना से। जॉर्ज ने संवाददाताओं से कहा कि यदि पूर्व मुख्यमंत्री में थोड़ी भी शर्म बची है तो उन्हें राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष के पद से इस्तीफा दे देना चाहिए।



मेरा मकसद पूरी राजनीति बदलना है: दिव्या मित्तल

» पूर्व आईएस ने बनाई नई पार्टी ‘जननीति भारत’
□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की पूर्व आईएस अधिकारी दिव्या मित्तल ने अपनी नई राजनीतिक पार्टी बनाने का ऐलान किया है। उन्होंने पार्टी का नाम ‘जननीति भारत’ रखा है। फेसबुक पर वीडियो जारी कर उन्होंने बताया कि उनकी पार्टी 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में उतरेगी। दिव्या मित्तल ने खुद मिर्जापुर जिले की सदर विधानसभा सीट से चुनाव लड़ने की घोषणा की है।

दिव्या मित्तल ने कहा कि ‘जननीति भारत’ में राज जनता का होगा और सरकार पांच साल तक जनता की इच्छा के मुताबिक चलनी चाहिए। इससे पहले 30 सितंबर को उन्होंने राजनीति में आने की घोषणा की थी। उस समय उन्होंने कहा था कि वह उत्तर प्रदेश में ही रहेंगी, सवाल उठाने से नहीं डरेंगी और किसी दूसरी पार्टी से जुड़ने के बजाय अकेले आगे बढ़ेंगी। उनका कहना था कि उद्देश्य केवल राजनेताओं को बदलना नहीं, बल्कि राजनीति को बदलना है। उन्होंने यह भी कहा था कि उन्हें पैसा और बाहुबल नहीं चाहिए। दिव्या मित्तल ने अपने संबोधन में मतदाता सूची से जुड़े मुद्दों पर भी सवाल उठाए। उन्होंने पूछा कि दशरथ नाम के व्यक्ति से 120 फॉर्म-7 क्यों भरवाए गए। उन्होंने कहा कि वर्कर्स, घरेलू

कामगारों और बेघर लोगों से प्रमाण मांगने की प्रक्रिया पर भी विचार होना चाहिए। उन्होंने आधार को मतदाता सूची से जोड़ने और एसआईआर प्रक्रिया को लेकर भी सवाल उठाए। सरकारी स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर उन्होंने आरोप लगाया कि सरकारी अस्पताल और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बंद हो रहे हैं, जबकि 500 से अधिक नर्सिंग होम के पंजीकरण किए गए हैं। उन्होंने इसे सरकारी स्वास्थ्य व्यवस्था को कमजोर कर निजी अस्पतालों को बढ़ावा देने की साजिश बताया। उनका कहना था कि अस्पतालों को बंद करने के बजाय उनकी व्यवस्था और इलाज की सुविधाओं में सुधार की जरूरत है। शिव शर्मा मामले में चर्चा में आई श्रद्धा दुबे को लेकर भी दिव्या मित्तल ने प्रतिक्रिया दी।

बिहार में करवट ले रही है सियासी अंगड़ाई

जेडीयू में आंतरिक कलह खुलकर सामने आई

- » एमएलसी चुनावों में स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के बहाने राट
- » भाजपा और राजद ने बनाई नई रणनीति
- » संजय झा व ललन सिंह अनंत सिंह व नीरज में मनमुटाव की खबरें

4पीएम न्यूज नेटवर्क

पटना। कभी बिहार में भाजपा के बड़े भाई की भूमिका में रही जदयू आज कल सियासी झंझावातों में फंसी है। अब उसके दिग्गज नेता शीर्ष नेतृत्व की बातों से नाराज से दिख रहे हैं। क्यों ऐसी खबरें सियासी गलियारों में तेर रही है कि केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह ने अपनी दूसरी पारी की तैयारी कर ली है? क्या उन्होंने जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा से अपना अलग रास्ता तलाश लिया है? ये सवाल अपने आप ही नहीं उठ रहे, ललन सिंह के ताजा बयान और जदयू के स्टार प्रचारक की लिस्ट से आउट होने के बाद उठे हैं?

बिहार के एमएलसी चुनावों में स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के बहाने केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने जितने तीर जदयू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा पर अपरोक्ष रूप से चलाए वह कोई हवा में नहीं चले। भाजपा कार्यालय, दिल्ली में हुई केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल और केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने संयुक्त संबोधन से राजनीतिक गलियारों में जो संदेश देना था, वो दे दिया। इतिहास गवाह रहा है कि केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह बगैर लाइफ लाइन लिए कोई बड़ा कदम नहीं उठाते। वहीं पटना के मोकामा विधायक अनंत सिंह और जेडीयू नेता नीरज कुमार के बीच पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र चुनाव को लेकर घमासान मचा है। पार्टी उम्मीदवार के खिलाफ प्रचार कर रहे अनंत सिंह ने नीरज कुमार पर तीखा तंज कसते हुए कहा कि वे 23 तारीख को उनका सारा गैस निकाल देंगे। इसबीच विपक्षी पार्टी राजद भी मोर्चा देने में जुटा है।



अनंत सिंह का नीरज के साथ जदयू को खुला चैलेंज

बिहार की राजनीति में एक बार फिर बाहुबली विधायक अनंत सिंह और जेडीयू नेता नीरज कुमार के बीच जुबानी जंग तेज हो गई है। मामला पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के एमएलसी चुनाव से जुड़ा है, जहां जेडीयू के आधिकारिक उम्मीदवार के खिलाफ जाकर अनंत सिंह जन सुराज पार्टी के प्रत्याशी का खुला समर्थन कर रहे हैं। चुनाव प्रचार के दौरान नालंदा पहुंचे अनंत सिंह ने जेडीयू नेता नीरज कुमार पर सीधा और तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा, वे पुदीना सिंह हैं और 23 तारीख को उनका (नीरज कुमार) सारा गैस निकाल देंगे। अतीत के मतभेदों और लगातार चल रहे सियासी विरोध के बीच अनंत सिंह के इस बागी तेवर से राजनीतिक गलियारों की भी पैनी नजर है। पटना स्नातक एमएलसी चुनाव को लेकर जेडीयू में आंतरिक कलह खुलकर सामने आ गई है। इस बगावत के बीच, नालंदा में चुनाव प्रचार करने जा रहे अनंत सिंह ने जेडीयू उम्मीदवार नीरज कुमार पर तीखा निशाना साधते हुए कहा है कि हम पुदीना सिंह हैं, 23 तारीख को उनका सारा गैस निकाल देंगे। हैरानी की बात यह है कि इस गंभीर बगावत और लगातार तीखे बयानों के बावजूद जेडीयू के शीर्ष नेतृत्व की ओर से अब तक कोई भी बड़ी आधिकारिक कार्रवाई नहीं की गई है, जिससे राजनीतिक गलियारों में चर्चाओं का बाजार गर्म है।

नीतीश के पिच पर खेलने की तैयारी

दरअसल, जदयू के भीतर यह सब इसलिए चल रहा कि नीतीश कुमार के बारे में कहा जा रहा है कि वे अस्वस्थ हैं और कुछ निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। यही वजह है कि पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है वह जदयू के भीतर गुटबाजी की ही तस्वीर है। इसीलिए अनंत सिंह भी साफ-साफ नीरज कुमार का विरोध कर रहे हैं। बड़ी बात तो यह है कि जिस केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह को इस मामले

को सुलझाने के लिए भेजा गया, उन्हीं ललन सिंह को जदयू के स्टार प्रचारक की सूची से ही गायब कर दिया गया। अब तो JD ने पटना



स्नातक निर्वाचन क्षेत्र को प्रेस्टीज इश्यू बना लिया है। कल नवादा और नालंदा की यात्रा में निशांत कुमार के नेतृत्व में पटना से संजय झा, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार चौधरी, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष संजय सरावगी समेत कई नेताओं ने एक तरह से अड्डा ही बना दिया है। अब देखना है कि पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र भी बांकीपुर विधानसभा उपचुनाव की तरह ही राजनीति के लिए कोई संदेश न बन जाए।

बीजेपी के साथ ललन सिंह का साफ्ट कार्नेर

दरअसल जदयू के भीतर गुटबाजी की शुरुआत को ले कर राजनीतिक गलियारों में जो चर्चा है, वह यह कि जनता दल यू के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा के बारे में जब से मंत्री बनने की बात शुरू हुई है, केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने अपना रास्ता अलग कर लिया है। उन्होंने एक छोर से निशांत कुमार को तो दूसरे छोर से बीजेपी नेतृत्व की बागडोर थाम ली है। उन्हें पता है कि केंद्रीय मंत्री बनाने की डोर बगैर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह की सहमति के बगैर संभव नहीं हो सकती है। उन्हें याद है कि जब जदयू ने आरसीपी सिंह और ललन सिंह दोनों को मंत्री पद देने की वकालत की थी तब बीजेपी ने एक मंत्री बनाने की बात कर

अपनी स्थिति स्पष्ट कर दी थी। तब नीतीश कुमार ने किसी को भी मंत्री नहीं बना कर पार्टी को बचा लिया था।

जब राजद के साथ सरकार थी लालू की तारीफ की थी

बिहार में जब राष्ट्रीय जनता दल और जनता दल यू की सरकार थी तब जदयू नेता ललन सिंह ने राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के बारे में कहा था कि लालू यादव जंगलराज के प्रतीक नहीं सामाजिक न्याय के नायक हैं। तब यह हवा चली थी कि यही ललन सिंह तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री और खुद उप मुख्यमंत्री बनना चाहते थे। लेकिन तब कहा जाता है कि नीतीश कुमार ने काफी सावधानी से पार्टी को और सरकार दोनों को भी बचा लिया।

हम पुदीना सिंह हैं, उनका गैस निकाल देंगे

दरअसल, पटना स्नातक निर्वाचन क्षेत्र के एमएलसी चुनाव को लेकर जेडीयू में आंतरिक कलह खुलकर सामने आ गई है। जेडीयू विधायक अनंत सिंह पार्टी के आधिकारिक उम्मीदवार के

खिलाफ जाकर जन सुराज पार्टी के प्रत्याशी का प्रचार कर रहे हैं। इस बगावत के बीच, अनंत सिंह ने जेडीयू नेता नीरज कुमार पर निशाना साधते हुए कहा है कि 23 तारीख को वे उनका सारा गैस निकाल देंगे।

हैरानी की बात यह है कि इस गंभीर बगावत के बावजूद जेडीयू के शीर्ष नेतृत्व की ओर से अब तक कोई भी बड़ी आधिकारिक कार्रवाई नहीं की गई है, जिससे राजनीतिक गलियारों में चर्चाएं तेज हो गई हैं।

कांग्रेस के विरुद्ध ललन की टिप्पणी वायरल

केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह ने बीजेपी नेतृत्व के साथ खड़े हो कर बड़ी मजबूती से पक्ष रखते कहा कि राहुल गांधी का चुनाव आयोग (सीईसी) के खिलाफ किया गए प्रदर्शन एक बचकानी हरकत है। राहुल गांधी अपनी दादी (इंदिरा गांधी) के पदचिह्नों पर चल रहे हैं और कांग्रेस पार्टी को 1974-75 के आपातकाल के दौर में ले जाना चाहती हैं। जिस तरह उनकी दादी ने सत्ता बचाने के लिए पूरे देश में आपातकाल



लगाया था, उसी तरह राहुल गांधी आज सत्ता पाने के लिए अराजकता की स्थिति पैदा करना चाहते हैं।

प्रशांत किशोर का दावा, चुनाव आयोग सत्ता में बैठे दल की मदद करता है

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और एसआईआर की प्रक्रिया से नाराज विपक्ष के प्रदर्शन के बीच जन सुराज के संस्थापक प्रशांत किशोर ने सनसनीखेज दावा किया है प्रशांत किशोर ने कहा है कि चुनाव आयोग सत्ता में बैठे हुए दल की मदद करता है। पीके बुधवार (14 अक्टूबर, 2026) को बिहार के सुप्रीम में थे। प्रशांत किशोर ने कहा, वोट चोरी जो शब्द है वो किसी एक व्यक्ति एक दल का मुद्दा हो सकता है। लेकिन समाज में, देश में, लोगों का एक बड़ा तबका चुनावों

की जो प्रक्रिया है। चुनाव आयोग की जो कार्यशैली है उससे संतुष्ट नहीं है। प्रशांत किशोर ने कहा कि पिछले 8-10 सालों में जिस तरह से चुनाव कराए जा रहे हैं, जिस तरीके से चुनाव आयोग वोटर लिस्ट बनाता है चाहे वह फॉर्म-6 हो या 7 हो, जिस तरीके से एसआईआर के जरिए लोगों



का नाम काटा गया है, जैसे चुनाव में पर्यवेक्षक नियुक्त किए जाते हैं, जिस प्रक्रिया से आचार संहिता को लागू कराया जाता है, ऐसा मालूम पड़ता है कि हर जगह चुनाव आयोग सत्ता में बैठे हुए दल की मदद करता है, इसलिए आज समाज का

एक बड़ा वर्ग है जो चुनाव आयोग की कार्यशैली से खुश नहीं है, वही आपको प्रदर्शन के तौर पर दिख रहा है। पीके ने एक बार फिर दोहराते हुए कहा कि ये प्रदर्शन रुकने वाला नहीं है। ये किसी एक व्यक्ति या दल का मामला नहीं है। देश में लोकतंत्र की शुद्धता का मामला है। जब तक चुनाव आयोग की कार्यशैली में पारदर्शिता वाली सुधार नहीं होगी तो इस तरह के प्रदर्शन होते रहेंगे। प्रशांत किशोर कोसी स्नातक विधान परिषद चुनाव में जन सुराज के उम्मीदवार

रजनीश रंजन के समर्थन में जनसभा के लिए सुप्रीम पहुंचे थे। इस मौके पर मतदाताओं से अपील की कि वे जाति, धर्म और राजनीतिक भय से ऊपर उठकर अपने मतदाता अधिकार का इस्तेमाल करें। सम्मेलन में प्रशांत किशोर ने क्षेत्र के 10 हजार पढ़े-लिखे युवाओं को उनकी योग्यता के अनुसार निजी क्षेत्र में नौकरी दिलाने की व्यवस्था करने का वादा किया। उन्होंने बिहार के विभिन्न श्रेणियों के शिक्षकों को सातवें वेतनमान का लाभ दिलाने की बात भी कही।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_SanjayS

जिद... सच की

बातें नहीं हकीकत में बनाएं स्मार्ट शहर

66

अभी यूपी लगातार बारिश ने सरकार के दावे की कलाई भी खोल दी। अब ऐसे में एकबार फिर शहरी विकास पर सभी सियासी दलों को बैठकर मंथन करना चाहिए। असल में स्मार्ट सिटी वह है, जहां नागरिकों को सुरक्षित सड़कें, भरोसेमंद पानी सीवेज व्यवस्था, प्रभावी कचरा प्रबंधन, सुगम यातायात और सुरक्षित सार्वजनिक स्थान मिलें। सिर्फ बड़े प्रोजेक्ट और स्मार्ट सिटी का नाम देने से शहर स्मार्ट नहीं बनेंगे। राजस्थान में हाल में हुए नगरीय निकाय चुनाव में भाजपा ने 309 नगरीय निकायों में से सर्वाधिक 200 से ज्यादा जगहों पर बोर्ड बनाकर सफलता प्राप्त की है।

भारत के हर शहर बेतहाशा बढ़ रहे हैं। पर विकास वैसा नहीं हो रहा जैसे दावे किए जा रहे हैं। वहीं स्मार्ट सिटी की योजना भी उतनी कारगर नहीं दिखाई दे रही है जितनी कागजों पर दिखाई जाती है। एनडीए सरकार के 12 साल हो गए पर स्मार्ट शहर मात्र बातें ही रह गई हैं। केंद्र से लेकर राज्य सरकारें इसके लिए योजनाएं बना रही हैं। पर दावों के बाद भी शहरों में अनियोजित विकास एक बहुत बड़ी समस्या है। अभी यूपी लगातार बारिश ने सरकार के दावे की कलाई भी खोल दी। अब ऐसे में एकबार फिर शहरी विकास पर सभी सियासी दलों को बैठकर मंथन करना चाहिए। असल में स्मार्ट सिटी वह है, जहां नागरिकों को सुरक्षित सड़कें, भरोसेमंद पानी सीवेज व्यवस्था, प्रभावी कचरा प्रबंधन, सुगम यातायात और सुरक्षित सार्वजनिक स्थान मिलें। सिर्फ बड़े प्रोजेक्ट और स्मार्ट सिटी का नाम देने से शहर स्मार्ट नहीं बनेंगे। राजस्थान में हाल में हुए नगरीय निकाय चुनाव में भाजपा ने 309 नगरीय निकायों में से सर्वाधिक 200 से ज्यादा जगहों पर बोर्ड बनाकर सफलता प्राप्त की है।

इस परिणाम को राज्य के शहरी मतदाता की अपेक्षाओं और बदलती प्राथमिकताओं के संदर्भ में भी देखा जाना चाहिए। नगरीय निकाय चुनावों से पहले भाजपा ने संकल्प पत्र के माध्यम से शहरों के समग्र विकास का स्पष्ट रोडमैप जनता के सामने रखा है। अब सरकार की नैतिक जिम्मेदारी है कि संकल्प पत्र में किए प्रत्येक वादे को समयबद्ध तरीके से धरातल पर उतारते हुए जनता की कसौटी पर खरा उतरे। विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार 2025 में भारत की शहरी आबादी करीब 35.7 प्रतिशत है। इसके बावजूद शहरों में अनियोजित विकास, जलभराव, अवैध कॉलोनियां, खराब सड़कें और कमजोर बुनियादी ढांचा आम शहरी नागरिक के लिए चुनौती बने हुए हैं। इस ओर सरकार को विशेष ध्यान देने की जरूरत है। अनियोजित शहरीकरण के कारण प्राकृतिक संपदा को हो रहे नुकसान पर जापान के क्यूशू विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार भारत के आठ बड़े शहरों के विस्तार से करीब 210 करोड़ रुपये की प्राकृतिक संपदा नष्ट हुई, जिसमें जंगल, घास के मैदान और वेटलैंड्स शामिल हैं। वहीं, संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक दुनिया में हर साहस पेरिस के बराबर निर्माण हो रहा है। तेजी से बढ़ते कंक्रीट के जंगल न केवल प्रकृति को नुकसान पहुंचा रहे हैं बल्कि प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संकट की चुनौतियों को भी बढ़ा रहे हैं। तेजी से शहरीकरण की ओर बढ़ रहा है। व्यापार, पर्यटन, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, रियल एस्टेट, परिवहन, छोटे व्यवसाय और सेवा क्षेत्र का विस्तार शहरों के माध्यम से ही होता है।

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

नागरिकता की आत्मा है वोट का अधिकार

विश्वनाथ सचदेव

बहुत पुरानी बात है। आज से ठीक 132 साल पहले महात्मा गांधी ने आत्म-सम्मान का एक मतलब सिखाया था दुनिया को। दक्षिण अफ्रीका में थे तब गांधीजी। गोरों की नेटाल सरकार ने वहां बसे भारतीयों को मताधिकार से वंचित करने का एक कानून पारित किया था। गांधीजी ने इस कानून का विरोध किया। उन्होंने गोरी सरकार को एक पत्र लिखकर यह बताया कि 'बिना वोट के अधिकार वाले भारतीय अपना आत्म-सम्मान खो बैठेंगे।' गांधीजी ने पत्र में लिखा कि चुनाव एक घटना मात्र नहीं होते। चुनाव इस बात की गारंटी होते हैं कि सबसे कमजोर व्यक्ति का भी महत्व हो। आसान नहीं था गोरों को यह बात समझाना, पर गांधी उन्हें यह समझाकर माने थे।

इसके लिए गांधीजी ने अपना भारत लौटना ही स्थगित नहीं किया, नेटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना भी की। औपनिवेशिक सचिव लॉर्ड रिपन को दस हजार भारतीयों के हस्ताक्षर वाली एक याचिका भेजी गई, जिसमें 1894 के मताधिकार संशोधन विधेयक को वापस लेने की मांग की गई थी। और तब गोरी सरकार को गांधीजी की इस मांग को स्वीकार करना पड़ा था। यह विधेयक वापस ले लिया गया था। यह बात अलग है कि बाद में गोरों ने नई चाल चली। दो साल बाद फिर से विधेयक लाया गया। पर उसमें से भारतीय शब्द हटाकर गैर-यूरोपीय मूल के लोगों का मताधिकार समाप्त करने की बात कही गयी थी। लेकिन उससे इस बात का महत्व कम नहीं हो जाता कि 132 साल पहले गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में मताधिकार के महत्व की लड़ाई लड़ी और जीती थी! यह गांधी के 'सत्याग्रह' के पहले की लड़ाई थी। यह एक संयोग ही है कि उस जीत के बाद आज गांधी के भारत में नागरिकों के मत देने के अधिकार की लड़ाई लड़ी जा रही है। नहीं, भारत सरकार ने मताधिकार वापस लेने का कोई कानून

पारित नहीं किया है। थोड़ा अंतर है बात में। गांधी के भारत में आज नागरिक मताधिकार की लड़ाई अवश्य लड़ रहे हैं, पर यह लड़ाई भारत के चुनाव आयोग के साथ है।

बिहार, पश्चिम बंगाल जैसे कुछ राज्यों में होने वाले चुनावों के दौरान हमारे चुनाव आयोग ने मतदाता सूची का एसआईआर यानी विशेष गहन पुनरीक्षण करने का निर्णय लिया और लगभग करोड़ों मतदाताओं के नाम सूची से हटा दिए गए। सूची में कटे नामों में ऐसे लाखों मतदाताओं के नाम भी थे, जो पिछले कई चुनावों में लगातार वोट देते आ रहे हैं! शोर मचा हुआ है। देश का मुख्य चुनाव आयुक्त सवालियों के घेरे

उम्मीद की गयी थी कि न्यायालय से कुछ राहत मिलेगी। तब उच्चतम न्यायालय के एक न्यायाधीश ने यह कहकर नागरिकों का आक्रोश और बढ़ा दिया था कि जिनका वोट देने का अधिकार इस बार छिन गया है, वे अगले चुनाव में वोट दे लेंगे। पता नहीं न्यायाधीश ने क्या सोचकर यह बात कही थी, पर इससे लोगों का गुस्सा अवश्य बढ़ गया था। नागरिकों के मताधिकार को इतने हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। वोट देने का अधिकार नागरिकता का सार है। इसी के माध्यम से सामान्य नागरिक शासन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है। हम न भूलें कि लोकतंत्र में नागरिक की



में है। मतदाता सूची के इस फेरबदल में लोगों को राजनीतिक बेईमानी नजर आ रही है। विवाद सड़कों पर भी चल रहा है और न्यायालय में भी। बात उच्चतम न्यायालय तक पहुंच गई है। न्यायालय का क्या निर्णय है, यह तो आने वाला कल ही बताएगा, पर वोटों की इस कथित हेराफेरी ने देश की राजनीति में एक उबाल-सा ला दिया है। मुद्दा बहुत गंभीर है, इसमें कोई संदेह नहीं। वोट का अधिकार नागरिकता की आत्मा है। ऐसे में देश के लाखों लोगों का यह अधिकार छिन जाना संदेह तो उत्पन्न करता ही है। इसे हल्के में नहीं लिया जा सकता। पश्चिम बंगाल में हुए मतदान से ठीक पहले जब वोट का अधिकार छिन जाने वाले नागरिकों ने न्यायालय का दरवाजा खटखटाया तो

राजनीतिक पहचान उसके वोट से ही पूरी होती है। लोकतंत्र की 'जनता की, जनता के द्वारा सरकार' वाली परिभाषा भी तभी सार्थक होती है, जब वोट देने का नागरिक का अधिकार सुनिश्चित हो।

नागरिक के मताधिकार को लेकर और चुनाव आयोग की संदेह में डालने वाली भूमिका के संदर्भ में आज यदि देश का युवा मतदाता आक्रोशित है तो इसे गंभीरता से समझने की आवश्यकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि ऐसे हर मुद्दे को विपक्ष भुनाने की कोशिश करता है, और करेगा, लेकिन मतदाताओं के गुस्से को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। देश के नागरिक को वोट देने का अधिकार आसानी से नहीं मिला है। इस अधिकार की रक्षा होनी ही चाहिए।

पंकज चतुर्वेदी

ओडिशा में गत माह विधानसभा में जब राज्य के वन एवं पर्यावरण मंत्री ने लिखित सवाल के जवाब में आंकड़ा पेश किया कि 2023-24 से 2025-26 के बीच राज्य में कुल 256 जंगली हाथियों की मौत हो चुकी है, तो सदन में सन्नाटा छा गया। इनमें से 13 हाथियों को शिकारियों ने सीधे मार गिराया, जबकि बाकी भोजन-पानी की कमी, बीमारी और मानव-हाथी संघर्ष का शिकार बने। राज्य में भाजपा की सरकार आने के बाद हाथियों की मौत न केवल एक लुप्त हो रही प्रजाति पर संकट है, बल्कि यह उजड़ते जंगलों और जंगल पर निर्भर आदिवासियों के अस्तित्व का भी प्रश्न बनता जा रहा है।

इसी सवाल का जवाब कुछ महीने पहले कंधमाल जिले में मिला था। बालिगुडा वन प्रभाग में एक हाथी की करंट लगने से संदिग्ध मौत हुई। विभागीय कार्रवाई और जांच से बचने के लिए वन अधिकारियों ने बिना किसी उच्च अधिकारी को सूचित किए शव को टुकड़ों में काटकर कंधमाल और कालाहांडी के अलग-अलग हिस्सों में दफना दिया। जिस विभाग की जिम्मेदारी हाथियों को बचाना है, वही उनकी मौत के सबूत मिटाने में जुट जाए, तो समझ आता है कि संकट सिर्फ जंगल में भोजन की कमी का नहीं, बल्कि तंत्र की नीयत का भी है। कुछ ही महीने बाद ठेंकानाल के हिंदोल क्षेत्र में एक फार्महाउस मालिक ने अपनी जमीन की सुरक्षा के नाम पर सोलर फेंसिंग में करंट दौड़ा दिया, जिसकी चपेट में आकर एक दंतैल हाथी मारा गया। मामले को दबाने के लिए शव को खेत में ही दफना दिया गया। वहीं, अगस्त महीने में, जिस दिन दुनिया विश्व

आदिवासी और जंगल संस्कृति पर भी खतरा



हाथी दिवस मना रही थी, ठीक उसी दिन संबलपुर के मुंडेर जंगल से एक हथिनी का सड़ा-गला शव बरामद हुआ, जिसकी मौत की वजह आज तक साफ नहीं हो पाई। ये तीनों घटनाएं बताती हैं कि हाथियों की मौत अब कोई अपवाद नहीं, बल्कि एक तयशुदा सिलसिला बन चुकी है, जिस पर पर्दा डालना प्रशासन की आदत में शुमार हो गया है।

इस सिलसिले में तीन कारण नज़र आते हैं। पहला, जंगल में प्राकृतिक भोजन और पानी की लगातार घटती उपलब्धता है। हाथी मजबूरन खेतों और बस्तियों की ओर रुख करते हैं और वहीं टकराव में या जहरीले पदार्थों की चपेट में आकर जान गंवाते हैं। दूसरा, खनिज संपदा से भरपूर ओडिशा के जंगलों में खनन के लिए होने वाले लगातार धमाके हैं, जो न सिर्फ हाथियों के सदियों पुराने आवागमन गलियारों को तोड़ते हैं, बल्कि उनकी सुनने की क्षमता और सामान्य व्यवहार को भी बिगाड़ देते हैं। इससे भ्रमित झुंड अनजान इलाकों में भटककर मुसीबत में फंसेते हैं। तीसरा, सघन जंगलों का लगातार सिकुड़ना चाहे वह

विकास परियोजनाओं की वजह से हो, अवैध कटाई से या अतिक्रमण से जिसने हाथियों के परंपरागत विचरण क्षेत्र को टुकड़ों में बांट दिया है। इन्हीं कारणों के चलते ओडिशा के गुस्सैल और भूखे हाथी अब पड़ोसी राज्यों का रुख करने लगे हैं। हाल ही में झारखंड के चंपुआ वन क्षेत्र में हाथी के हमले में एक किसान की जान गई। वहीं, छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में जान बचाकर भाग रही एक बुजुर्ग महिला को हाथी ने पटककर मार डाला। यानी यह संकट अब पूरे मध्य-पूर्वी भारत की समस्या बन चुका है।

ओडिशा के जिन जिलों में हाथियों की मौतें सबसे ज्यादा हो रही हैं क्वॉंझर, ठेंकानाल, कंधमाल, कालाहांडी, संबलपुर ये सभी आदिवासी-बहुल क्षेत्र हैं, जहां जंगल सिर्फ पर्यावरण का हिस्सा नहीं, बल्कि आदिवासी समाज की पूरी जीवन-पद्धति की रीढ़ है। सदियों से आदिवासी समुदाय जंगल पर ही जलाऊ लकड़ी, वनोपज, दवा-जड़ी-बूटियों और आजीविका के लिए निर्भर रहे हैं। वहीं, हाथी को इन समुदायों की लोक-परंपरा और मान्यताओं में देवत्व तथा

समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है। अब जब खनन के लिए यही जंगल उजाड़े जाते हैं तो सबसे पहली गहरी चोट आदिवासी समुदायों पर ही पड़ती है। उनकी जमीन और आजीविका के साधन खत्म होते हैं। साथ ही, हाथियों के भटकते झुंड उन्हीं की बस्तियों में घुसकर तबाही मचाते हैं। यानी जंगल के उजड़ने की कीमत आदिवासी समाज दोहरी चुका रहा है एक तरफ अपनी परंपरागत जीवनशैली और संसाधनों की, और दूसरी तरफ हाथियों के हमलों में अपनी जान और घर-बार की।

हाथी और जंगल का संरक्षण सिर्फ वन्यजीव सुरक्षा का मसला नहीं, बल्कि ओडिशा के लाखों आदिवासियों के अस्तित्व और सम्मान से जुड़ा सवाल है। सरकार की तरफ से एंटी-पोचिंग कैंप, वन्यजीव गलियारों की सुरक्षा और जन-जागरूकता अभियान जैसे दावे दोहराए जाते हैं, लेकिन ज़मीनी हकीकत कुछ और है। जिन अधिकारियों को हाथियों की जान बचाने का दायित्व है, वही मौत के मामलों को छिपाने में लग जाते हैं। न खनन क्षेत्रों में विस्फोटों को नियंत्रित करने की कोई ठोस नीति है और न ही अवैध बिजली फेंसिंग पर सख्त कार्रवाई होती है। हर घटना के बाद जांच के आदेश जरूर दिए जाते हैं, लेकिन मूल समस्या जस की तस बनी रहती है। हालिया घटना से, दरअसल, नुकसान सिर्फ हाथियों तक सीमित नहीं है। जंगल और बस्ती, दोनों तरफ लगातार खून बह रहा है। हाथी जंगल के पारिस्थितिकी तंत्र में बीज फैलाव और वन पुनर्जनन की अहम भूमिका निभाते रहे हैं, इसलिए उनकी लगातार होती मौतें सिर्फ एक प्रजाति का संकट नहीं, बल्कि पूरे जंगल के भविष्य पर मंडराता खतरा है।

मोटापे और बीमारियों से बचाएंगी ये लो-ऑयल सब्जियां

भारतीयों को खाने में तेल की खपत कम करनी चाहिए इससे दोहरा फायदा होगा। एक तरफ लोगों की सेहत बेहतर होगी, वहीं दूसरी ओर देश की आयातित खाद्य तेलों पर निर्भरता भी कम होगी। ये हम सभी को समझना चाहिए कि ज्यादा तेल खाने से सेहत भी खराब होती है। आज के समय में अधिक तेल वाला खाना मोटापा, डायबिटीज और हृदय रोग जैसी समस्याओं को बढ़ा रहा है। ऐसे में कम तेल में बनने वाली सब्जियां न केवल हेल्दी विकल्प हैं बल्कि स्वाद में भी शानदार होती हैं। खास बात यह है कि कई पारंपरिक भारतीय सब्जियां सिर्फ 2 चम्मच तेल में आसानी से तैयार हो जाती हैं। सही मसालों और पकाने की तकनीक के जरिए कम तेल में भी स्वाद बरकरार रखा जा सकता है।

सब्जियां

लौकी की सब्जी

लौकी को सेहत के लिए बेहद फायदेमंद माना जाता है। इसमें पानी की मात्रा काफी अधिक होती है, जिससे यह जल्दी पक जाती है और इसमें ज्यादा तेल डालने की जरूरत नहीं पड़ती। सिर्फ 2 चम्मच तेल में जीरा, हरी मिर्च और हल्के मसालों का तड़का लगाकर स्वादिष्ट लौकी की सब्जी तैयार की जा सकती है। लौकी फाइबर से भरपूर होती है, जो पाचन तंत्र को मजबूत बनाने में मदद करती है। गर्मियों में यह शरीर को ठंडक पहुंचाती है और वजन घटाने वाले लोगों के लिए भी बेहतरीन विकल्प मानी जाती है।



पालक कॉर्न की सब्जी

पालक और कॉर्न का कॉम्बिनेशन हेल्दी और टेस्टी दोनों माना जाता है। पालक में आयरन, कैल्शियम और विटामिन्स भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जबकि कॉर्न स्वाद के साथ एनर्जी भी देता है। सिर्फ 2 चम्मच तेल में लहसुन, प्याज और हल्के मसालों के साथ यह सब्जी आसानी से तैयार हो जाती है। कम तेल में बनने के बावजूद इसका स्वाद काफी अच्छा होता है। यह सब्जी बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी के लिए फायदेमंद मानी जाती है और हेल्दी डाइट का बेहतरीन हिस्सा बन सकती है।



तोरई मसाला

तोरई एक हल्की और जल्दी पकने वाली सब्जी है। इसमें प्राकृतिक नमी होने के कारण इसे पकाने में ज्यादा तेल की जरूरत नहीं पड़ती। सिर्फ 2 चम्मच तेल में प्याज, टमाटर, लहसुन और हल्के मसालों के साथ स्वादिष्ट तोरई मसाला तैयार किया जा सकता है। यह सब्जी पेट के लिए हल्की होती है और पाचन को बेहतर बनाने में मदद करती है। कम कैलोरी वाली यह सब्जी डायबिटीज और वजन नियंत्रित रखने वाले लोगों के लिए भी फायदेमंद मानी जाती है।

पत्ता गोभी मटर

पत्ता गोभी और मटर की सब्जी कम तेल में बनने वाला स्वादिष्ट और पौष्टिक विकल्प है। पत्ता गोभी बहुत जल्दी पक जाती है, इसलिए इसमें ज्यादा तेल की आवश्यकता नहीं होती। सिर्फ 2 चम्मच तेल में जीरा, हरी मिर्च और हल्के मसालों के साथ यह सब्जी आसानी से तैयार की जा सकती है। मटर मिलाने से इसका स्वाद और पोषण दोनों बढ़ जाते हैं। यह सब्जी फाइबर, विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होती है, जो शरीर की इम्यूनिटी मजबूत करने में मदद करती है।



भिंडी फ्राई

भिंडी ऐसी सब्जी है जिसे सही तरीके से पकाया जाए तो कम तेल में भी बेहतरीन स्वाद मिलता है। अक्सर लोग भिंडी बनाने में ज्यादा तेल इस्तेमाल करते हैं, लेकिन धीमी आंच पर पकाने से सिर्फ 2 चम्मच तेल में भी यह कुरकुरी बन सकती है। इसमें हल्दी, धनिया, अमचूर और लाल मिर्च जैसे मसाले डालकर स्वाद बढ़ाया जा सकता है। भिंडी में फाइबर और विटामिन भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, जो ब्लड शुगर कंट्रोल करने और पाचन बेहतर रखने में मदद करते हैं।



हंसना मजा है

टीचर- एक औरत एक घंटे में 50 रोटी बना लेती है, तो तीन औरतें एक घंटे में कितनी रोटी बनाएंगी...बच्चा- एक भी नहीं, क्योंकि तीनों मिलकर सिर्फ चुगली करेंगी...! बच्चे की बात सुनकर टीचर अभी तक बेहोश है...

पप्पू जलेबी बेच रहा था, लेकिन कह रहा था आलू ले लो आलू ले लो... राहगीर- लेकिन ये तो जलेबी है, पप्पू- चुप हो जा! वरना मक्खियां आ जाएंगी।

वकील - हत्या की रात तुम्हारे पति के अंतिम शब्द? पत्नी- मेरा चश्मा कहां है संगीता... वकील - तो इसमें मारने वाली क्या बात थी... पत्नी- मेरा नाम रंजना है! पूरा कोर्ट खामोश...

एक सज्जन बता रहे थे कि वो पिछले 20 सालों से गीता के उपदेश सुनते आ रहे हैं...! पता करने पर पता चला कि गीता उनकी धर्मपत्नी का नाम है...

बंता- तेरे घर से हमेशा हसने कि आवाज आती है, इतनी खुशी का राज क्या है? संता- मेरी बीवी मुझे जूते मारती है, लग जाये तो वो हंसती है, नहीं लगे तो मैं हंसता हूं!

कहानी

धन का सम्मान या दान का सम्मान

एक नगर में राजेश नामक कंजूस व्यक्ति रहता था। वह खाने, पहनने तक में भी कंजूस था। एक बार घर से एक कटोरी गुम हो गई। जिसके दुःख में राजेश ने 3 दिन तक कुछ न खाया। परिवार के सभी सदस्य उसकी कंजूसी से दुखी थे। मोहल्ले में उसकी कोई इज्जत न थी, क्योंकि वह सामाजिक कार्य में दान नहीं करता था। एक बार पड़ोस में धार्मिक कथा का आयोजन हुआ। राजेश को सद्बुद्धि आई तो वह भी कथा सुनने के लिए सत्संग में पहुंच गया। वेद के वैज्ञानिक सिद्धांतों को सुनकर उसको भी रस आने लगा। उसकी कोई कदर न करता फिर भी वह प्रतिदिन कथा में आने लगा। कथा के समाप्त होते ही वह सबसे पहले शंका पूछता। इस तरह उसकी रूचि बढ़ती गई। कथा के अंत में कथावाचक ने इसकी सूचना दी कि कल लंगर होगा। इसके लिए जो श्रद्धा पैदा हुई वह भी एक गटरी बांध लाया। भीड़ काफी थी। जब सभी दान देकर यथास्थान बैठ गए। तब सब कंजूस को देख रहे थे। कंजूस को विद्वान की ओर बढ़ता देख सभी को हंसी आ गई क्योंकि सभी को मालूम था कि यह महाकंजूस है। उसकी गटरी को देख लोग तरह-तरह के अनुमान लगाते और हंसते, लेकिन कंजूस को इसकी परवाह न थी। कंजूस ने आगे बढ़कर विद्वान ब्राह्मण को प्रणाम किया। जो गटरी अपने साथ लाया था, उसे उसके चरणों में रखकर खोला तो सभी लोगों की आंखें फटी-की-फटी रह गई। कंजूस के जीवन की जो भी अमूल्य संपत्ति गहने, जेवर, हीरे-जवाहरात आदि थे उसने सब कुछ दान कर दिया। फिर वह यथास्थान जाने लगा तो विद्वान ने कहा, महाराज! आप वहां नहीं, यहां बैठिये। कंजूस बोला, पंडित जी! यह मेरा आदर नहीं है, यह तो मेरे धन का आदर है, अन्यथा मैं तो रोज आता था और यही पर बैठता था, तब मुझे कोई न पूछता था। ब्राह्मण बोला, नहीं, महाराज! यह आपके धन का आदर नहीं है, बल्कि आपके महान त्याग (दान) का आदर है। यह धन तो थोड़ी देर पहले आपके पास ही था, तब इतना आदर-सम्मान नहीं था जितना की अब आपके त्याग (दान) में है इसलिए आप आज से एक सम्मानित व्यक्ति बन गए हैं।

7 अंतर खोजें



जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

मेघ 	कार्यक्षेत्र में नए विचार और नीतियां सफलता दिलाएंगी। व्यापार में नए सौदे तय होंगे, लाभ के अवसर मिलेंगे। मित्रों और प्रियजनों के साथ संबंध मजबूत होंगे।	तुला 	पदोन्नति या नई जिम्मेदारी मिलने के योग बन रहे हैं। साझेदारी के कारोबार में बड़ा फायदा मिल सकता है। प्रेम संबंधों में प्रगाढ़ता आएगी, मन प्रसन्न रहेगा।
वृषभ 	सहकर्मियों के साथ तालमेल बिठाकर काम करना फायदेमंद रहेगा। निवेश के मामलों में सोच-समझकर निर्णय लें। जीवनसाथी के साथ प्यार और समझ बढ़ेगी।	वृश्चिक 	कार्यस्थल पर आपकी मेहनत का उचित परिणाम मिलेगा। व्यापार में नए प्रयोग लाभदायक साबित होंगे। परिवार के सदस्यों के साथ खुशनुमा समय बीतेगा।
मिथुन 	नई योजनाओं पर काम शुरू करने के लिए दिन अनुकूल है। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक साबित होगी। पारिवारिक रिश्तों में मिठास और आपसी सहयोग रहेगा।	धनु 	बौद्धिक कार्यों और शोध से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। व्यापार में नए सौदे आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत करेंगे। संतान पक्ष से शुभ समाचार मिल सकता है।
कर्क 	वरिष्ठ अधिकारियों का मार्गदर्शन तरक्की के द्वार खोलेगा। व्यापार में तरक्की और नए ऑर्डर मिलने की संभावना है। परिवार का माहौल खुशनुमा और शांतिपूर्ण रहेगा।	मकर 	कार्यक्षेत्र में धैर्य से काम लें, सफलता जरूर मिलेगी। कागजी कार्यवाई में पूरी स्पष्टता बनाए रखें। परिवार में पुराने मतभेद सुलझ सकते हैं।
सिंह 	आपके निर्णय लेने की क्षमता कार्यस्थल पर सराही जाएगी। व्यापारिक गतिविधियों में तेजी आएगी और मुनाफा बढ़ेगा। दौलत जीवन में सुख और सार्मजस्य बना रहेगा।	कुम्भ 	नए प्रोजेक्ट में आपकी कार्यशैली की प्रशंसा होगी। व्यापार में विस्तार की योजनाएं फलीभूत होंगी। दोस्तों के साथ तालमेल बेहतरीन रहेगा। मन में उत्साह रहेगा।
कन्या 	अपनी जिम्मेदारियों को समय पर पूरा करने का प्रयास करें। लेन-देन के मामलों में सावधानी बरतना जरूरी है। वाणी पर संयम रखें। पेट से जुड़ी समस्या से बचें।	मीन 	दफ्तर में आपकी बात का प्रभाव बढ़ेगा, सम्मान मिलेगा। व्यापार में नए ग्राहक जुड़ेंगे और आय बढ़ेगी। मांगलिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

आमिर खान के भांजे को भारत छोड़ने का नोटिस

बॉलीवुड एक्टर इमरान खान को मुंबई पुलिस ने नोटिस भेजा है। अभिनेता ने बीते दिनों मुंबई के अगस्त क्रांति मैदान में मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर हुए प्रदर्शन में हिस्सा लिया था। मुंबई पुलिस ने इमरान खान को हिरासत में भी लिया था। अब उन्हें पुलिस ने भारत छोड़ने का नोटिस भेजा है। मुंबई पुलिस ने इमरान खान को 28 अक्टूबर तक भारत छोड़ने का नोटिस भेजा है। बता दें कि इमरान खान पर इमिग्रेशन एक्ट की संबंधित धारा के तहत भारतीय नागरिक ना होते हुए भी भारत में इस तरह के प्रदर्शन में शामिल होने के आरोप में करवाई की गई है। खबरों के अनुसार, इमरान खान के पास अमेरिकी पासपोर्ट है। इमरान ने मुंबई के अगस्त क्रांति मैदान में हुए एक विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया था, जिसमें मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की गई थी। जानकारी के अनुसार, इमरान खान के खिलाफ इमिग्रेशन एक्ट की धारा 29 और 7 के तहत कार्रवाई शुरू की गई है। उन पर आरोप है कि भारतीय नागरिक न होने के बावजूद उन्होंने विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया। मालूम हो कि शनिवार को विरोध प्रदर्शन के दौरान मुंबई पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया था। हिरासत में लिए जाने के बाद इमरान खान ने अपनी एक तस्वीर साझा की, जिसमें वे एक पुलिस वैन के अंदर बैठे नजर आए। इसके साथ उन्होंने कैप्शन लिखा, लगता है मैं ब्राइव पर जा रहा हूं। मीडिया से बात करते हुए इमरान खान ने कहा कि वे मुंबई के एक नागरिक के तौर पर वहां आए थे और उनकी कोई खास मांग नहीं थी। अभिनेता ने कुछ सवाल उठा। उन्होंने कहा, मेरी कोई मांग नहीं है। मैं यहां एक नागरिक के तौर पर हूं। एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर, जो इसी शहर में रहता है। मैं यह जानने आया हूं कि लोगों की आवाजाही की आजादी पर पाबंदी क्यों लगाई जा रही है? लोगों की आवाज क्यों दबाई जा रही है? बस इसीलिए मैं यहां हूं।

इमरान खान ने सीईसी के खिलाफ प्रदर्शन में लिया था भाग



फिल्म गजब रात का ट्रेलर रिलीज

भ्रष्ट पुलिसवाला बन आए मनोज बाजपेयी

मनोज बाजपेयी की मोस्टअवेटेड फिल्म 'घूसखोर पंडत' का नाम अब बदलकर 'गजब रात' कर दिया गया है। नेटपिलक्स ने 15 अक्टूबर को फिल्म का ट्रेलर रिलीज कर दिया है। साथ ही फिल्म की रिलीज डेट भी सामने आ गई है। ये सस्पेंस थ्रिलर 23 अक्टूबर को नेटपिलक्स पर रिलीज होगी। 'गजब रात' के ट्रेलर में मनोज बाजपेयी एक भ्रष्ट पुलिस अधिकारी के किरदार में नजर आ रहे हैं। उनका किरदार एक फायदेमंद रात की तलाश में है, लेकिन एक घायल लड़की और मर्डर केस से जुड़ी घटना उसकी पूरी रात बदल देती है। धीरे-धीरे अपराध, साजिश और बड़े फैसलों का जाल फैलता जाता है। फिल्म की कहानी दिल्ली के इर्द-गिर्द घूमती



है, जहां कई किरदारों की अलग-अलग कहानियां एक ही रात में आपस में जुड़ जाती हैं। ट्रेलर का टोन डार्क, तेज और सस्पेंस से भरा लग रहा है। नेटपिलक्स ने इसे कई कहानियां, कई किरदार और सच जाहिर करने के लिए सिर्फ एक रात के तौर पर प्रोजेक्ट किया है। ट्रेलर में मनोज बाजपेयी एक बार फिर अपनी स्क्रीन प्रेजेंस से ध्यान खींच रहे हैं। उनके किरदार में भ्रष्टाचार, चालाकी और संकट के बीच फंसे इंसान की परेशानी साफ झलकती है। फिल्म का निर्देशन नीरज पांडे ने किया है, जिनके साथ मनोज बाजपेयी लगभग एक दशक बाद फिर काम कर रहे हैं। 'गजब रात' में मनोज बाजपेयी के अलावा नुसरत भरुचा, साकिब सलीम, दिव्या दत्ता, अक्षय ओबेरॉय और कीकू शारदा जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। फिल्म 23 अक्टूबर 2026 को नेटपिलक्स पर रिलीज होगी। ट्रेलर देखकर लग रहा है कि ये एक रात के भीतर फैली क्राइम थ्रिलर कहानी होगी, जिसमें हर किरदार का अपना राज और अपनी मजबूरी होगी।

बोले- नहीं चाहता कभी मेरे ऊपर कोई बायोपिक बने

कॉफी विद करण सीजन 9 में सलमान खान ने अपनी बायोपिक को लेकर बड़ा बयान दिया। उन्होंने कॉमेडी, रोमांस और एक्शन फिल्मों के लिए डेविड धवन, संजय लीला भंसाली, सूरज बड़जात्या और कबीर खान को अपनी पसंद बताया। हालांकि, सलमान ने साफ कहा कि उनकी जिंदगी पर कभी बायोपिक नहीं बनेगी। कॉफी विद करण सीजन 9 की सलमान खान ने धमाकेदार शुरुआत की है। करण जौहर पहले ही यह बता चुके हैं कि यह उनके शो का आखिरी सीजन है। पहले एपिसोड में मेहमान बनकर आए सलमान खान ने इस दौरान जहां अपनी हेल्थ, पिता बनने की इच्छा और जिंदगी के कई पहलुओं पर बात की, वहीं रैपिड फायर राउंड में जब करिश्मा कपूर ने उनसे बायोपिक को लेकर सवाल किया, तो 60 साल के सुपरस्टार ने दो टूक कहा कि वह नहीं

चाहते कि कभी उनकी बायोपिक बने। सलमान ने कहा- मेरी जिंदगी मेरे साथ ही कब्र में चली जाएगी। सलमान खान के इस बयान की सोशल मीडिया पर फैंस के बीच चर्चा शुरू हो गई है। सलमान को सवाल के तौर पर चार डायरेक्टर के नाम विकल्प के तौर पर दिए गए थे। पूछा गया था कि वह अपनी बायोपिक किससे डायरेक्ट करवाना चाहेंगे। उन्होंने कहा कि यह डिपेंड करता है कि उनकी जिंदगी पर कॉमेडी बन रही है, रोमांस या एक्शन फिल्म। हालांकि, इसके बाद उन्होंने कहा कि वह नहीं चाहते उनकी निजी जिंदगी को बड़े पर्दे पर दिखाया जाए। रैपिड फायर राउंड के दौरान करिश्मा कपूर ने सलमान खान से पूछा कि अगर उनकी जिंदगी पर बायोपिक बनती है, तो वह सूरज बड़जात्या, कबीर खान, डेविड धवन और संजय लीला भंसाली में से किसे इसके लिए चुनेंगे। इस पर सलमान ने कहा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि कहानी कैसी है। अगर मेरी जिंदगी पर कॉमेडी फिल्म बनानी हो, तो डेविड धवन।



अर्जुन बिजलानी ने धर्म के ठेकेदारों से मांगी माफी

टीवी एक्टर अर्जुन बिजलानी ने पत्नी नेहा स्वामी बिजलानी से जुड़े टी-शर्ट विवाद पर माफी मांग ली है। यह विवाद तब शुरू हुआ, जब उनकी पत्नी नेहा की टी-शर्ट पर लोगों को उर्दू में अल्लाह, रसूल, मुहम्मद लिखा दिखा। इसके बाद से ही सोशल मीडिया पर उनकी आलोचना और ट्रोलिंग शुरू हो गई। धर्म के कुछ ठेकेदारों ने कहा कि यह हिंदू होकर इस्लाम धर्म की पैरोकारी है। अब अर्जुन ने इंस्टाग्राम स्टोरी पर बयान जारी कर माफी मांगी है। साथ ही सफाई दी है कि नेहा को टी-शर्ट पर लिखे शब्दों के अर्थ की जानकारी नहीं थी। 43 साल के एक्टर ने कहा कि उनकी पत्नी का किसी भी धर्म या समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का उनका कोई इरादा नहीं था। अर्जुन बिजलानी और नेहा इन दोनों धमाल विद पति पत्नी और पंगा शो में नजर आ रहे। एक्टर ने अपने बयान में सोशल मीडिया पर नेहा के लिए की जा रही अभद्र टिप्पणियों और धमकियों की भी निंदा की। उन्होंने

नेहा की टी-शर्ट पर उर्दू में लिखा था अल्लाह, रसूल, मुहम्मद



कहा कि उनका परिवार सभी धर्मों और मान्यताओं का सम्मान करता है। यह अनजाने में हुई भूल थी। ऐसे में वह लोगों से समझदारी और संवेदनशीलता दिखाने की अपील करते हैं। अर्जुन बिजलानी ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर बयान जोरी कर बताया कि यह टी-शर्ट उन्हें बैंकों के एक मॉल में फैन ने गिफ्ट दी थी। जब नेहा ने इसे पहना, तब उन्हें और अर्जुन को इस पर लिखे शब्दों के अर्थ और महत्व की जानकारी नहीं थी। अर्जुन ने स्पष्ट किया कि यह सब अनजाने में हुआ और किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का कोई इरादा नहीं था। उन्होंने अपने बयान में कहा, जब नेहा ने वह टी-शर्ट पहनी, तो उन्हें उस पर लिखे शब्दों के अर्थ और महत्व के बारे में बिल्कुल भी जानकारी नहीं थी।

बॉलीवुड को हिंदूफोबिया है: एकता

टीवी की क्वीन कही जाने जानी मशहूर प्रोड्यूसर और फिल्ममेकर एकता कपूर ने बॉलीवुड को हिंदूफोबिक कहा है। दिग्गज एक्टर जितेंद्र की 51 साल की बेटी एकता ने हिंदी इंडस्ट्री में हिंदू लोककथाओं और पौराणिक कहानियों को नजरअंदाज किए जाने पर भी सवाल उठाए हैं। रणवीर अल्लाहबादिया के पॉडकास्ट में एकता ने दो टूक शब्दों में कहा है कि बॉलीवुड में फैंटेसी कहानियों पर उत्साह से दिखाया जाता है, लेकिन भारतीय संस्कृति से जुड़ी कहानियों को लेकर उतनी दिलचस्पी नहीं दिखती। यही नहीं, एकता ने दावा किया है कि उनके तिलक लगाने और कलावा बांधने पर भी लोग सवाल उठाते हैं। उन्हें इस कारण सनकी और तांत्रिक तक कहा गया है। टीवी इंडस्ट्री को कहानी घर घर की और क्योंकि सास

भी कभी बहू थी जैसे दर्जनों सुपरहिट शोज देने वाली एकता कपूर इन दिनों द वन : फोर्स ऑफ द फॉरैस्ट को लेकर चर्चा में हैं। वह इस फिल्म की प्रोड्यूसर हैं, जो बिहार के वनदेवी मंदिर की लोककथा पर बनी है। सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया स्टारर इस फिल्म को दीपक कुमार मिश्रा ने प्रोड्यूस किया है। एकता का कहना है कि भारतीय लोककथाओं को फिल्मों में जगह मिलनी चाहिए और ऐसी कहानियों को दर्शकों से भी स्वीकार्यता मिलना जरूरी है। एकता कपूर ने कहा कि किसी फिल्म की सफलता केवल उसकी कमाई से तय नहीं होती, बल्कि उसकी कहानी और उससे जुड़ी सांस्कृतिक पहचान भी मायने रखती है। उन्होंने अपनी फिल्म द वन का उदाहरण देते हुए कहा कि भारतीय लोककथाओं पर आधारित कहानियों को भी उसी तरह स्वीकार किया जाना चाहिए, जैसे फैंटेसी की दूसरी कहानियों को किया जाता है। एकता ने कहा, फिल्म द वन के लिए कमाई के आंकड़े बहुत

बोलीं- तिलक लगाती हूं, कलावा बांधती हूं तो कहते हैं सनकी और तांत्रिक

अच्छे हैं। लेकिन सबसे अहम बात यह है कि यह लोककथाओं पर आधारित है। मैं कैमरे पर खुलकर कह रही हूं कि यहां हिंदूफोबिया है। हमें कई चीजों से डर लगता है। हम एनिमेटेड कहानियों को तो स्वीकार कर लेते हैं, लेकिन लोककथाओं और पौराणिक कथाओं पर बात करने में हमें दिक्कत होती है। इसलिए, मैं इन चीजों को सामने लाने और लोगों द्वारा इन्हें अपनाए जाने के पक्ष में हूं। अब पहले के मुकाबले स्वीकार्यता काफी बढ़ गई है। एकता कपूर ने बातचीत के दौरान अपनी आस्था को खुलकर जाहिर करने के अनुभव भी शेयर किए। उन्होंने बताया कि टीका और कलावा जैसे धार्मिक प्रतीक पहनने पर भी लोग उनके पहनावे को लेकर सवाल उठाते हैं। एकता ने एक घटना का जिक्र करते हुए बताया कि किसी ने उनसे पूछा था, तुमने किसी सनकी की तरह कपड़े क्यों पहने हैं? इस टिप्पणी पर हैरानी जताते हुए उन्होंने कहा, क्या टीका और कलावा पहनना अजीब होना है? मैं आपको बता भी नहीं सकती!



दुष्यंत गौतम की नियुक्ति पर बवाल रोक की मांग उठाई

» कांग्रेस समेत कई दलों ने उठाया सवाल
» अंकिता भंडारी हत्याकांड मामले में सीबीआई जांच पूरी होने तक गौतम पदभार ग्रहण नहीं करें : राहुल

नई दिल्ली। नव नियुक्त राज्यपाल दुष्यंत गौतम को हटाने की मांग बढ़ गई है। जहां अंकितस भंडारी के माता पिता उनकी नियुक्ति पर रोक चाहते हैं। वहीं विपक्ष दल भी यही मांग कर रहे हैं। उधर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू से आग्रह किया कि वह सरकार से दुष्यंत गौतम को सिक्किम का राज्यपाल नियुक्त किए जाने के फैसले पर पुनर्विचार करने को कहें और यह सुनिश्चित किया जाए कि अंकिता भंडारी हत्याकांड मामले में सीबीआई जांच पूरी होने तक गौतम पदभार ग्रहण नहीं करें।

गांधी ने राष्ट्रपति को लिखे पत्र में यह भी कहा कि अंकिता भंडारी हत्याकांड में 'वीआईपी' की पहचान से जुड़े सवाल की

पद पर रहते हुए आपराधिक कार्यवाही शुरू नहीं रखी जा सकती

राहुल गांधी ने दावा किया कि राज्यपाल के पद पर रहते हुए किसी व्यक्ति के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही शुरू या जारी नहीं रखी जा सकती और ऐसे में गौतम की नियुक्ति उन्हें सीबीआई की पहुंच से बाहर कर सकती है। उन्होंने कहा, ऐसी जांच

जिसका परिणाम कभी अनियोजन में नहीं बदल सके, वह केवल नाम की जांच रह जाती है। राज्यपाल को अपने राज्य के लोगों का विश्वास प्राप्त होना चाहिए और इस तरह के संदेह के घेरे में रहने वाला व्यक्ति ऐसा विश्वास हासिल नहीं कर सकता।" लोकसभा

में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि राज्यपाल की नियुक्ति प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद की सलाह पर की जाती है, लेकिन राष्ट्रपति के पास सचिवालय के अनुच्छेद 74(1) के तहत मंत्रिपरिषद से उसकी सलाह पर पुनर्विचार करने को कहने का अधिकार है।

सीबीआई जांच अभी जारी है और ऐसे समय में गौतम की राज्यपाल के रूप में नियुक्ति से गंभीर सवाल खड़े होते हैं। उन्होंने दावा किया कि अंकिता के परिवार समेत कई लोगों ने गौतम का नाम इस मामले से जोड़ते हुए आरोप लगाए हैं। हालांकि, इन आरोपों की सीबीआई जांच

अभी पूरी नहीं हुई है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने पत्र में कहा, "मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप सरकार से इस नियुक्ति पर पुनर्विचार करने को कहें और सीबीआई द्वारा अपनी जांच पूरी किए जाने तक श्री गौतम पदभार ग्रहण नहीं करें।" उत्तराखंड की 19 वर्षीय अंकिता भंडारी की सितंबर 2022 में हत्या कर दी

पीएम ने महिलाओं की सुरक्षा के प्रति 'घोर उपेक्षा' दिखाई

उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर भी निशाना साधा और आरोप लगाया कि गौतम की नियुक्ति की सलाह देकर उन्होंने महिलाओं की सुरक्षा के प्रति "घोर उपेक्षा" दिखाई है। गांधी ने पत्र में अंकिता के माता-पिता का उल्लेख करते हुए कहा कि वे अपनी बेटी के लिए न्याय की लड़ाई लड़ रहे हैं और अब इस नियुक्ति का भी विरोध कर रहे हैं। उन्होंने राष्ट्रपति से हस्तक्षेप की अपील करते हुए कहा कि अंकिता ने 'घृणित मांग' को मानने से इनकार किया और इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकाई। गांधी ने कहा कि राष्ट्रपति को अंकिता के शोकाकुल माता-पिता को सांत्वना देने और राज्यपाल के उच्च संवैधानिक पद की गरिमा की रक्षा के लिए कदम उठाना चाहिए।

गई थी। वह ऋषिकेश के निकट वनंतारा रिजॉर्ट में रिसेप्शनिस्ट के तौर पर काम करती थीं। इस मामले में रिजॉर्ट के मालिक पुलकित आर्य और उसके दो कर्मचारियों को दोषी ठहराया गया और वे उम्रकैद की सजा काट रहे हैं। अंकिता के माता-पिता ने गौतम की नियुक्ति के खिलाफ बुधवार को इंडिया गेट पर धरना दिया था और उन्हें बृहस्पतिवार तड़के हिरासत में ले लिया गया था। बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया।

मंधाना की कप्तानी में नए युग की शुरुआत करेगा भारत

» भारत और जिम्बाब्वे के बीच पहला टी20 मैच आज
» 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रायपुर। भारत जब नवनियुक्त कप्तान स्मृति मंधाना के नेतृत्व में जिम्बाब्वे के खिलाफ तीन मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय सीरीज के साथ नए युग की शुरुआत करेगा तो उसकी निगाह अपने खेल को और बेहतर बनाने पर होगी। यह पहला अवसर है जब भारत और जिम्बाब्वे की महिला टीम द्विपक्षीय सीरीज में एक-दूसरे का सामना करेंगी। भारतीय टीम ने हाल में एशियाई स्तर पर अपना दबदबा साबित किया, लेकिन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट विशेषकर छोटे प्रारूप में उसे अभी काफी सुधार करने की जरूरत है।

भारत और जिम्बाब्वे की महिला क्रिकेट टीमों के बीच रायपुर में आज पहला टी20 मैच होगा। तीन मैचों की टी20 सीरीज में महिला दर्शकों को स्टेडियम में मुफ्त प्रवेश दिया जाएगा। छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के सुझाव के बाद यह फैसला लिया गया है। सीरीज के सभी मुकाबले शहीद वीर नारायण सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में खेले जाएंगे। अगर भारतीय बल्लेबाजी की बात करें तो मंधाना और शेफाली वर्मा ने टीम को अच्छी शुरुआत दी है लेकिन भारतीय बल्लेबाज बीच के ओवर में संघर्ष करते रहे

हैं। भारत को अभी तीसरे नंबर के लिए एक अदद बल्लेबाज की तलाश है। इसके अलावा पूर्व कप्तान हरमनप्रीत कौर की खराब फॉर्म भी चिंता का विषय बनी हुई है। हरमनप्रीत अब टीम में विशेषज्ञ बल्लेबाज के रूप में खेलेंगी जिससे उन पर अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव और भी बढ़ जाएगा। भारत को निचले क्रम में ऋचा घोष का साथ देने के लिए कुछ और पावर हिटर तैयार करने की भी जरूरत है।



पूनम राउत ने कहा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा

नई दिल्ली। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की अनुभवी बल्लेबाज पूनम राउत ने गुरुवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास का एलान कर दिया। इसके साथ ही एक दशक से अधिक लंबे उनके अंतरराष्ट्रीय करियर पर विराम लग गया। दाएं हाथ की बल्लेबाज ने साल 2009 में भारत के लिए डेब्यू किया था। उन्होंने अपना आखिरी मुकाबला जून 2021 में इंग्लैंड के खिलाफ वनडे मैच के रूप में खेला था। पूनम राउत ने अपने करियर में भारतीय टीम के लिए तीन प्रारूपों में योगदान दिया। उन्होंने वनडे में 2299 रन, टी20 में 719 रन और चार टेस्ट मैचों में 264 रन बनाए। उनके नाम अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कुल चार शतक दर्ज हैं, जिनमें तीन वनडे और एक टेस्ट शतक शामिल हैं। पूनम राउत के करियर का सबसे यादगार दौर 2017 महिला वनडे विश्व कप रहा, जब भारतीय टीम ने फाइनल तक का सफर तय किया था। इस टूर्नामेंट में पूनम ने 381 रन बनाए और टीम की सफलता में अहम भूमिका निभाई।

राहुल गांधी ने मेरा अपमान नहीं किया : डीके शिवकुमार

» सीएम बोले- भाजपा इस मुद्दे को अनावश्यक रूप से राजनीतिक रंग दे रही
» 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। दिल्ली में आयोजित 'मार्च फॉर डेमोक्रेसी के दौरान राहुल गांधी और कर्नाटक के मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार का एक वीडियो वायरल होने के बाद सियासी बहस छिड़ गई है। भाजपा ने वीडियो को लेकर राहुल गांधी पर डीके शिवकुमार का अपमान करने का आरोप लगाया था। अब इस पूरे विवाद पर खुद डीके शिवकुमार ने प्रतिक्रिया देते हुए राहुल गांधी का बचाव किया है।

उन्होंने कहा कि राहुल ने केवल उनकी सुरक्षा की चिंता करते हुए उन्हें प्रदर्शन के दौरान वाहन में वापस जाने की सलाह दी



थी और इस मुद्दे को अनावश्यक रूप से राजनीतिक रंग दिया जा रहा है। शिवकुमार ने भाजपा के उन आरोपों को खारिज कर दिया, जिनमें कहा गया था कि दिल्ली में हुए 'मार्च फॉर डेमोक्रेसी के दौरान राहुल गांधी ने उनका अपमान किया। मंगलुरु में पत्रकारों से बातचीत के दौरान शिवकुमार ने कहा कि राहुल गांधी वही नेता हैं जिन्होंने उन्हें मुख्यमंत्री बनाया है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के भीतर अपार मानवीय संवेदनाएं और शक्ति हैं।

नगर निगम की ओटीएस में जोन-1 का दबदबा

» जोन-3 और जोन-6 भी टॉप शी में
» दो महीने में 11.51 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व जमा, 6,687 भवन स्वामियों को 6.94 करोड़ रुपये से ज्यादा की छूट

लखनऊ। लखनऊ नगर निगम की एकमुश्त समाधान योजना (ओटीएस) के तहत गृहकर वसूली में जोन-1 ने पूरे शहर में पहला स्थान हासिल किया है। 15 अगस्त से 15 अक्टूबर 2026 तक के आंकड़ों में जोन-1 ने 2.07 करोड़ रुपये से अधिक का राजस्व जमा कराकर अन्य जोनों को पीछे छोड़ दिया। वहीं, जोन-3 दूसरे और जोन-6 तीसरे स्थान पर रहा।



नगर निगम की इस योजना के तहत दो महीने में 6,687 भवन स्वामियों ने भुगतान किया, जिससे निगम के खाते में 11.51 करोड़ रुपये से अधिक पहुंचे। इस दौरान करदाताओं को 6.94 करोड़ रुपये से अधिक की छूट भी दी गई। ओटीएस योजना के तहत जोन-1 ने 2,07,07,899.05 रुपये का राजस्व जमा कराया। यहां 703 भवन स्वामियों ने योजना का लाभ उठाया और उन्हें 1,59,64,119.60 रुपये की छूट मिली।

प्रशांत भूषण के सत्ता परिवर्तन वाले बयान पर भड़की भाजपा

» पात्रा बोले- यह देश किसी की जागीर नहीं
» 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बीजेपी सांसद संबित पात्रा ने वकील प्रशांत भूषण और विपक्ष पर निशाना साधा। उन्होंने सत्ता परिवर्तन की मांग को लेकर उन पर आरोप लगाया कि उनके ये बयान चुनी हुई सरकार को कमजोर करने की कोशिश की ओर इशारा करते हैं। पात्रा ने आरोप लगाया कि विपक्ष का अभियान केवल मतदाता सूची के एसआईआर तक सीमित नहीं है। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी और अन्य लोग राजनीतिक अस्थिरता पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने उन पर तख्तापलट करने की कोशिश करने का आरोप लगाया और कहा कि यह देश किसी एक व्यक्ति का नहीं है, और न ही यह किसी एक इंसान या एक परिवार का है।



यह देश इसके 1.4 अरब लोगों का है। उन्होंने कहा कि प्रशांत भूषण ने कहा कि यह संघर्ष सत्ता परिवर्तन के लिए है। मैं बिल्कुल स्पष्ट कर दूँ कि यह देश किसी की निजी संपत्ति नहीं है। यह किसी एक परिवार की जागीर नहीं है। यह 1.4 अरब लोगों का देश है। जब वे कहते हैं कि वे सत्ता परिवर्तन के लिए लड़ रहे हैं, तो इससे वही बात साबित होती है जो भारतीय जनता पार्टी और देश के आम नागरिक हमेशा से कहते आए हैं— राहुल गांधी और उनके साथियों का असली मकसद एसआईआर मुद्दे से जुड़ा नहीं है, और न ही वे हमारे बच्चों के भविष्य के लिए लड़ रहे हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य सत्ता परिवर्तन करना, सत्ता पर कब्जा करना और किसी भी कीमत पर अपनी सरकार बनाना है—बिना चुनाव लड़े या बिना कोई मेहनत किए—क्योंकि जनता बार-बार उन्हें नकारती रही है। हमारा संविधान सरकार बदलने की एक स्पष्ट प्रक्रिया तय करता है। पात्रा ने कहा कि इस देश में हर पांच साल में चुनाव होते हैं, जहां लोग अपने वोट देने के अधिकार का इस्तेमाल करते हैं। सत्ता में बदलाव के लिए यही वैध तरीके हैं। लेकिन आप इस प्रक्रिया में विश्वास नहीं करते।

जोन-3 ने जुटाए 1.92 करोड़

राजस्व वसूली में जोन-3 ने 1,92,15,572.90 रुपये जमा कराकर दूसरा स्थान हासिल किया। इस जोन में 1,177 भवन स्वामियों को 1,00,64,064.79 रुपये की छूट दी गई। वहीं, जोन-6 ने 1,85,05,746.12 रुपये का राजस्व जमा कराकर तीसरा स्थान प्राप्त किया। यहां 1,298 भवन स्वामियों को 1,54,38,379.71 रुपये की छूट मिली। लाभार्थियों की संख्या के मामले में जोन-6 सबसे आगे रहा।

बकायेदारों को राहत, नगर निगम का खजाना भी भरा

नगर निगम के आंकड़ों के अनुसार, 15 अगस्त से 15 अक्टूबर तक ओटीएस योजना के माध्यम से कुल 11,51,85,256.19 रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। इसके साथ ही भवन स्वामियों को कुल 6,94,73,082.66 रुपये की छूट प्रदान की गई। योजना के तहत ब्याज में राहत मिलने से बकायेदारों को गृहकर जमा करने का अवसर मिला, वहीं नगर निगम को राजस्व संग्रह बढ़ाने में मदद मिली।

जोन-1 के जोनल अधिकारी ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि आगे भी बेहतर प्रदर्शन करते हुए जोन-1 को पहले स्थान पर बनाए रखने का प्रयास किया जाएगा।

दिल्ली के कारोबारियों को सुप्रीम झटका, जल्द सुनवाई से इंकार

» कर्नाट प्लेस के सेंट्रल पार्क को बंद करने के आदेश के खिलाफ याचिका

» शीर्ष अदालत बोली- सभी संबंधित पक्षों में बेहतर समझ आएगी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कर्नाट प्लेस के सेंट्रल पार्क को बंद करने के आदेश के खिलाफ कारोबारियों ने याचिका फाइल की है। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को तत्काल सुनवाई करने से इनकार कर दिया। कोर्ट ने उम्मीद जताई कि सभी संबंधित पक्षों में बेहतर समझ आएगी। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की



मर्चेंट एसोसिएशन ने दायर की याचिका

वकील जय अर्जुन देहादरिया ने दिल्ली किराना कमिटी और दिल्ली आयरन एंड स्टील मर्चेंट एसोसिएशन द्वारा दायर एक याचिका का जिक्र किया। इसमें सेंट्रल पार्क में विरोध प्रदर्शन के आह्वान को लेकर चिंता जताई गई है। उनके अनुसार, इससे रोजाना 200 करोड़ रुपये का व्यापार बाधित होगा। उन्होंने बताया कि नई दिल्ली नगर निगम ने कल रात एक नोटिस जारी कर इस जगह को बंद करने का आदेश दिया है। वकील ने दलील दी कि त्योहारों का मौसम आने वाला है, ऐसे में जगह को बंद करने से कारोबार को भारी नुकसान होगा।

अध्यक्षता वाली बेंच ने इस याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर दिया।

सीजेआई सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमल्लय बागची की बेंच ने कहा, हमें उम्मीद है कि सभी लोग समझदारी से काम लेंगे। छोटे दुकानदार इन्हीं दिनों अपनी आजीविका कमाते हैं। हम

जब ऐसी नौबत आएगी, तब देखा जाएगा : जस्टिस बागची

जस्टिस बागची ने कहा कि विरोध प्रदर्शन से जुड़े कई मुद्दे जैसे विरोध करने का अधिकार, नृणाफली बेचने का प्रस्ताव और कानून-व्यवस्था से जुड़ी चिंताएं आपस में जुड़े हुए हैं। जस्टिस बागची ने कहा, कोई विरोध करना चाहता है, कोई नृणाफली बेचना चाहता है और कोई कानून-व्यवस्था बनाए रखना चाहता है। ये सभी बातें एक-दूसरे से जुड़ी हैं। जस्टिस बागची ने कहा, अगर व्यापार में नुकसान होता है तो हम अपने संवैधानिक अधिकारों का इस्तेमाल करेंगे। जब ऐसी नौबत आएगी, तब देखा जाएगा। बेंच ने बताया कि इस याचिका को 26 या 27 अक्टूबर को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जा सकता है।

दिया कि अगर उठाए गए कदम जरूरत से ज्यादा (अनुचित) पाए जाते हैं तो अदालत के पास हस्तक्षेप करने का पूरा अधिकार है। इसमें सार्वजनिक कानून और मुआवजा कानून के तहत मिली शक्तियां भी शामिल हैं।

मणिपुर में फिर भड़की हिंसा

» कामजोंग में भीड़ के हमले में महिला की हत्या

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गुवाहाटी। मणिपुर के कामजोंग जिले में सदिग्ध नंगा उग्रवादियों द्वारा किए गए कथित हमले में एक कुकी महिला की मौत हो गई और उसका पति घायल हो गया। राज्य में जारी जातीय हिंसा के बीच, समुदाय के दो अन्य लोग भी लापता बताए जा रहे हैं। मृतक महिला हतनेइकिम हाओकिप मोलनोई गांव की रहने वाली थी। शुरुआती जानकारी के अनुसार, यह समूह जरूरी सामान खरीदने के लिए फाईकोह जा रहा था तभी फाईकोह और ऐशु के बीच सड़क पर उन पर हमला किया गया।



हतनेइकिम के पति घायल हो गए, जबकि उनके साथ मौजूद दो अन्य नागरिक अभी भी लापता हैं। गुरुवार को हुए इस हमले के बाद कुकी-नंगा संघर्ष में मारी गई कुकी महिलाओं की संख्या बढ़कर 10 हो गई है। इनमें दो गर्भवती महिलाएं भी शामिल हैं। ये झड़पें कुकी-मैतेई संघर्ष के बाद हुई हैं, जो 2023 से 2025 तक चला था। यह हमला उस घटना के पांच दिन बाद हुआ है, जिसमें तीन जिलों में नौ लोगों की जान चली गई थी। इनमें दो कुकी, एक गोरखा और छह नंगा पुरुष शामिल थे। इस साल फरवरी में कुकी-नंगा संघर्ष शुरू होने के बाद से कम से कम 22 नागा और 32 कुकी लोगों की जान जा चुकी है। बुधवार देर रात सुरक्षा बलों को कांगपोकपी जिले में नंगा व्यक्ति अजिनबोउ रिंगकामाई का कटा हुआ सिर मिला। 10 अक्टूबर को जब सदिग्ध कुकी उग्रवादियों ने मकुई अशांग गांव पर हमला किया तो मारे गए चार नंगा पुरुषों में वह भी शामिल थे। हमले के दौरान उनका सिर धड़ से अलग हो गया था और वह मिल नहीं रहा था। 11 अक्टूबर को उनका बिना सिर वाला शव इंपाल के जवाहरलाल नेहरू इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज ले जाया गया।

अधिकारों का हनन कर रही है भाजपा : अभिषेक

» अंकिता भंडारी के माता-पिता की हिरासत पर भड़के टीएमसी सांसद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस के सांसद अभिषेक बनर्जी ने बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर लोकतांत्रिक अधिकारों को कमजोर करने और शांतिपूर्ण प्रदर्शनों को प्रतिबंधित करने का आरोप लगाया। उन्होंने अंकिता भंडारी के माता-पिता के प्रति एकजुटता भी व्यक्त की, जिन्हें इंडिया गेट पर प्रदर्शन के दौरान दिल्ली पुलिस ने हिरासत में लिया था।



डायमंड हार्बर से सांसद ने सोशल मीडिया पर एक कड़े पोस्ट में आरोप लगाया कि नागरिकों को शांतिपूर्ण ढंग से विरोध करने, असहमति जताने और सरकार से सवाल पूछने के उनके अधिकार पर लगातार पाबंदियों का सामना करना पड़ रहा है। अंकिता के माता-पिता को हिरासत में लिए जाने का जिक्र करते हुए बनर्जी ने कहा कि यह बेहद दुखद है कि एक शोक संतप्त परिवार को अपनी आवाज उठाने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। अंकिता के माता-पिता अपनी बेटी के लिए न्याय की मांग कर रहे थे और 2022 में हुई उसकी हत्या में कथित 'वीआईपी' के पहलू पर सवाल उठा रहे थे। अंकिता के माता-पिता को बृहस्पतिवार तड़के कांग्रेस के कुछ नेताओं के साथ हिरासत में लिया गया था। हालांकि, बाद में उन्हें रिहा कर दिया गया।

विपक्ष की बांग्लादेश जैसे हालात बनाने की कोशिश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कांग्रेस और उसके सहयोगियों पर जाने-अनजाने भारत विरोधी ताकतों के हाथों में खेलते नजर आने का आरोप लगाया और कहा कि हिंसा और अराजकता की आग में देश को झोंककर बांग्लादेश जैसी स्थिति बनाने का ख्वाब देख रही कांग्रेस ने अब अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी के नाम का इस्तेमाल करने का सारा नैतिक अधिकार खो दिया है। रक्षा मंत्री ने शुक्रवार को भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर आयोजित संवाददाता सम्मेलन में निर्वाचन आयोग की कार्यप्रणाली में कथित अनियमितताओं को लेकर प्रदर्शन कर रही कांग्रेस, उसके राजनीतिक सहयोगियों और अन्य संगठनों को जमकर खरी-खोटी सुनायी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत की



प्रतिष्ठा बढ़ रही है इसलिए स्वाभाविक है कि तमाम शक्तियों को भारत का यह उभार रास नहीं आ रहा होगा। सिंह ने कांग्रेस और उसके सहयोगियों पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा, देश को यह समझने की आवश्यकता है कि दशकों से चुनाव हार रहे राजनीतिक दल जाने या अनजाने में आज

रक्षामंत्री का कांग्रेस पर तीखा हमला

इन (भारत विरोधी) शक्तियों के हाथों में खेलते हुए नजर आ रहे हैं। उन्होंने दिल्ली में जारी प्रदर्शन की तरफ इशारा करते हुए कहा कि आज स्पष्ट हो गया है दिल्ली में जो कुछ भी हो रहा है वह अराजकता द्वारा भारत की प्रगति को पटरी से उतारने का एक निंदनीय प्रयास है। सिंह ने कहा कि चौरी-चौरा में हिंसा हो जाने मात्र से ही महात्मा गांधी ने अपना पूरा असहयोग आंदोलन रोक दिया था लेकिन खुद को महात्मा गांधी की उत्तराधिकारी बताने वाली कांग्रेस हिंसा और अराजकता के द्वारा सत्ता परिवर्तन जैसी बातें करके अपने राजनीतिक पराजय का बदला देश से लेना चाहती है।

मोदी जी, अफसर उलझन में हैं मैं समझा दूं: राहुल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो के भारत दौरे को लेकर केंद्र सरकार पर तंज कसा है। उन्होंने कहा कि विदेश मंत्रालय के अधिकारी ही इस बात को लेकर उलझन में हैं कि आखिर चल क्या रहा है। राहुल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए यहां तक कह दिया कि अगर वे चाहें तो इस मामले को समझाने के लिए राहुल खुद तैयार हैं।

राहुल गांधी ने शुक्रवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर लिखा, मिस्टर रुबियो ने अपने कर्मचारी को मुंबई बुलाया है। मोदी जी, विदेश मंत्रालय में आपके अधिकारी उलझन में हैं कि आखिर चल क्या रहा है। बेहतर होगा कि आप ही समझा दें। या फिर, अगर आप चाहें तो मैं भी समझा सकता हूं।

कार्यरों के जाने के बाद कांग्रेस में सिर्फ शेर बचे : खरगे

» युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ राहुल की बातचीत के दौरान बोले अध्यक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ राहुल गांधी की बातचीत के दौरान उनके और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बीच खुलकर चर्चा हुई। इस दौरान राहुल गांधी ने उन कई प्रमुख नेताओं का जिक्र किया, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में पार्टी छोड़ दी है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और पूर्व केंद्रीय मंत्री गुलाम नबी आजाद का उदाहरण देते हुए राहुल गांधी ने युवा नेताओं से कहा कि कार्यरों और लालचियों के चले जाने के बाद कांग्रेस में अब केवल शेर बचे हैं। सूत्रों के हवाले से बताया गया कि इस मौके पर खरगे ने गांधी पर हल्के-फुल्के अंदाज में तंज कसते हुए कहा कि जो नेता पार्टी

छोड़कर गए हैं, वे सभी उनके दोस्त थे। कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ अनौपचारिक बातचीत के दौरान राहुल ने राजनीति में दोस्ती और दुश्मनी को लेकर अपने नजरिए के बारे में एक दिलचस्प बात बताई। रिपोर्ट के मुताबिक, राहुल गांधी ने युवा नेताओं से कहा कि जो लोग लालची या डरपोक थे। उन्होंने पार्टी छोड़ दी। या तो वे सुविधाओं और सुरक्षा की चाह में चले गए या फिर प्रवर्तन निदेशालय-ईडी और केंद्रीय जांच ब्यूरो-सीबीआई के डर से। इस खरगे ने

मजाकिया अंदाज में कहा, वे सब आपके दोस्त थे। इस टिप्पणी से थोड़ा असहज होते हुए राहुल गांधी ने जवाब दिया, मेरी बहन यहीं बैठी हैं। उन्हें पता है कि वे (सिंधिया) मेरे दोस्त नहीं थे। राहुल ने खरगे का उदाहरण देते हुए बताया कि दो बार मुख्यमंत्री बनने का मौका चूकने के बावजूद कांग्रेस अध्यक्ष ने कभी भी अपनी विचारधारा से समझौता नहीं किया। राहुल ने यह भी दावा किया कि मोदी सरकार के पास केवल आठ से दस महीने बचे हैं। राहुल ने यूथ कांग्रेस, नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया और सेवा दल के लगभग 60 कार्यकर्ताओं को चाय पर पार्टी मुख्यालय बुलाया था।



राहुल ने सुनाया किस्सा

इसके बाद गांधी ने राजनीतिक संबंधों के बारे में अपनी समझ को स्पष्ट करने के लिए अपनी दादी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से जुड़ा एक किस्सा सुनाया। उन्होंने कहा, मुझे राजनीतिक सीख अपनी दादी से मिली। एक बार मैंने उनसे पूछा कि आपकी सबसे अच्छी दोस्त कौन हैं? उन्होंने जवाब दिया कि उनकी कोई सबसे अच्छी दोस्त नहीं है। मैंने एक ऐसी महिला का नाम लिया जो अक्सर हमारे घर आती थी और पूछा कि क्या वह आपकी सबसे अच्छी दोस्त नहीं है? मेरी दादी ने कहा कि नहीं हो सकती है कि मैं उसकी सबसे अच्छी दोस्त होऊं, लेकिन वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त नहीं है। इस किस्से से सबक लेते हुए राहुल गांधी ने खरगे की ओर रुख किया और कहा, मैं एक राजनीतिक व्यक्ति हूं। जो मेरा दोस्त दिखता है, जरूरी नहीं कि वह असल में दोस्त हो और जो मेरा दुश्मन लगता है, जरूरी नहीं कि वह सच में दुश्मन हो। आपके लिए यह पहचान पाना बहुत मुश्किल है कि मेरे असली दोस्त कौन हैं।

उन्होंने उन्हें अपना काम जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि विरोध-प्रदर्शन और संघर्ष उनके राजनीतिक प्रशिक्षण का एक अहम हिस्सा हैं।